राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

समय दर्शन

ESTD : Since 2011

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक खबरों के साथ

वर्ष 06, अंक 81 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये | रायपुर, शनिवार 20 अप्रैल 2024 | www.samaydarshan.in

21 राज्यों की 102 सीटों पर 63 प्रतिशत वोटिंग

त्रिपुरा में सबसे ज्यादा 80 , बिहार में सबसे कम 48 प्रतिशत; बंगाल-मणिपुर में हिंसा

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा के फर्स्ट फेज में 21 राज्यों-केंद्र शासित प्रदेशों की 102 सीटों पर वोटिंग पूरी हुई है। सुबह 7 बजे से शाम 6 हुई वोटिंग में 63 प्रतिशत लोगों ने मतदान किया। सबसे ज्यादा 80 प्रतिशत वोटिंग त्रिपुरा में हुई, जबकि सबसे कम 48 प्रतिशत वोटिंग बिहार में हुई। सीटों के हिसाब से यह सबसे बड़ा फेज है। दो राज्यों पश्चिम बंगाल और मणिपुर में वोटिंग के दौरान हिंसा की भी हुई। इसके अलावा अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में विधानसभा चुनाव के लिए भी वोट डाले गए। अरुणाचल में 64 प्रतिशत और सिक्किम में 68 प्रतिशत लोगों ने राज्य में सरकार बनाने के लिए वोट डाले।

कूचबिहार में भाजपा- टीएमसी - कार्यकर्ताओं में पथराव

पश्चिम बंगाल के कूचबिहार में भाजपा और टीएमसी कार्यकर्ताओं के बीच पथराव हो गया। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि कूचबिहार के तूफानगंज में भाजपा कार्यकर्ताओं ने पोलिंग बूथ पर हिंसा की। तृणमूल एजेंट्स से मारपीट की गई है, इसमें कई घायल हैं। ञ्ररूष्ट ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता हथियारों के साथ बूथ के सामने खड़े होकर मतदाताओं को डरा रहे हैं।

इस इलाके में गुरुवार रात भी भाजपा कार्यकर्ताओं ने हिंसा की और तृणमूल के अस्थाई दफ्तर में आगजनी की। टीएमसी ने भाजपा प्रत्याशी के खिलाफचुनाव आयोग में शिकायत की है। भाजपा ने भी तृणमूल के कार्यकर्ताओं पर हिंसा का आरोप लगाया है।

इम्फाल में उपद्रवियों ने ईवीएम जलाई, तोड़फोड़ भी हुई

पूर्वी इम्फाल के मोइरंगकंपू में चुनाव के दौरान आगजनी की घटना सामने आई है। यहां उपद्रवियों ने ईवीएम मशीन को जला दिया।

वहीं इंफाल पूर्वी जिले के खुरई लाईखुटलेंबी में गुस्साए लोगों ने ईवीएम मशीन में तोड़फोड़ कर दी। इन लोगों का आरोप था कि हथियारबंद बदमाशों ने उनका वोट डाल दिया। वोटिंग के दौरान मणिपुर के बिष्णुपुर में भी फायरिंग हुई। मणिपुर की दो लोकसभा सीटों (मणिपुर इनर और मणिपुर आउटर) पर भी इस फेज में वोटिंग है।

हिंसा को देखते हुए आउटर सीट के कुछ हिस्सों में 26 अप्रैल को भी वोटिंग होगी। बंगाल के कूचबिहार में पोलिंग ड्यूटी में लगे सीएआरएफ जवान की मौत हो गई है। अस्पताल सूत्रों के मुताबिक, जवान का नाम नीलेश कुमार है। वो बिहार से चुनाव ड्यूटी पर आया था। साथियों को वो बीमार हालत में मिला। जब उसे अस्पताल लाया गया, तब डॉक्टर्स ने उसे मृत घोषित कर दिया। नगालैंड के 6 जिलों में लगभग 0 प्रतिशत वोटिंग हुई है। ये जिले हैं- मोन, लॉन्गलेंग, तुएनसान्ग, नोकलाक, शामाटोर और किफिरे। ये सभी पूर्वी नगालैंड में आते हैं। ईस्टर्न नगालैंड पीपुल्स ऑर्गेनाइजेशन इन जिलों के लिए अलग प्रशासन और पहले से अधिक वित्तीय स्वंत्रता की मांग कर रहा है।

शाम पांच बजे तक 64.73 फीसदी मतदान, बूथ के पास ब्लास्ट, जवान शहीद

लोकसभा चुनाव के पहले चरण में छत्तीसगढ़ की बस्तर लोकसभा सीट पर मतदान हुआ लोगों ने बढ़चढ़कर मताधिकार का प्रयोग किया। कई इलाकों में तीन बजे तक मतदान खत्म हो गया है। चुनाव को लेकर कड़ी सुरक्षा है। नारायणपुर विधानसभा क्षेत्र के मतदान केंद्र क्रमांक 42 में दूल्हा देवेश ठाकुर एवं दुल्हन गंगोत्री ठाकुर ने विवाह के तुरंत बाद अपने मताधिकार का प्रयोग किया और बाकी मतदाताओं के लिए एक मिसाल पेश की। बस्तर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र कोण्डागांव, नारायणपुर, चित्रकोट, दंतेवाड़ा, बीजापुर और कोंटा में तीन बजे तक खत्म हो गया। इसके आलावा बाकि जगहों पर शाम पांच बजे तक मतदान होगा। नक्सल प्रभावित सीट होने की वजह से तीन बजे तक ही मतदान होना था। बीजापुर में निर्वाचन में लापरवाही बरतने की शिकायत सही पाए जाने पर जिला निर्वाचन अधिकारी ने दो कर्मचारियों पर निलंबन की कर्रवाई की हैं। निलंबन अवधि में कर्मचारियों का मुख्यालय जिला पंचायत कार्यालय व जनपद पंचायत कार्यालय बीजापुर निर्धारित किया गया है। कमिश्नर बस्तर संभाग श्याम धावड़े और आईजी बस्तर रेंज श्री सुंदरराज पी. ने लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत 19 अप्रैल शुक्रवार को जगदलपुर शहर के शहीद भगतसिंह हाईस्कूल में स्थापित मतदान केन्द्र क्रमांक 75 में तथा कलेक्टर विजय दयाराम के. और पुलिस अधीक्षक शलभ सिन्हा ने भैरमगंज स्कूल स्थित मतदान केंद्र 104 में सपरिवार कतारबद्ध होकर अपने मताधिकार का उपयोग किया। इस दौरान उन्होंने आदर्श मतदान केंद्र परिसर में बनाये गए सेल्फी जोन में सेल्फी भी ली। इस अवसर पर कमिश्नर, आईजी, बस्तर कलेक्टर ने बस्तर लोकसभा के सभी मतदाताओं से लोकतंत्र के इस पर्व में व्यापक सहभागिता निभाने का आग्रह किया। कमिश्नर श्याम धावड़े ने बस्तर संभाग के मतदाताओं से अपील करते हुए कहा कि आज लोकतंत्र का महापर्व है और मतदाता के रूप में हम सभी को बहुमूल्य अधिकार मिला हुआ है इसका उपयोग अवश्य करें। छत्तीसगढ़ में बीजापुर के उसूर थाना इलाके के गलगम में पोलिंग बूथ से 5 सौ मीटर दूर ग्रेनेड ब्लास्ट हुआ था। ब्लास्ट में घायल सीआरपीएफ-196 बटालियन का जवान शहीद हो गया। जवान का नाम देवेंद्र कुमार है। जवान एरिया डोमिनेशन पर निकले थे।

पूर्व आईपीएस मुकेश गुप्ता के खिलाफ नहीं होगी सीबीआई जांच :बिलासपुर हाईकोर्ट ने कार्रवाई को किया निरस्त

3 करोड़ के भ्रष्टाचार के थे आरोप

बिलासपुर (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के जस्टिस दीपक तिवारी ने पूर्व आईपीएस मुकेश गुप्ता के खिलाफष्टक्चढ्ढ जांच की अनुशंसा को खारिज कर दिया है। लोक आयोग ने उनके खिलाफ कार्रवाई करते हुए राज्य शासन से मेहता मेमोरियल ट्रस्ट में भ्रष्टाचार के आरोपों पर सीबीआई से जांच कराने की अनुशंसा की थी, जिसे अवैधानिक बताते हुए हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई थी।

रायपुर निवासी माणिक मेहता ने तत्कालीन आईपीएस और आईपीएस मुकेश गुप्ता पर मिक्की मेहता मेमोरियल ट्रस्ट के नाम पर राज्य शासन से 3 करोड़ रुपए अनुदान राशि लेकर भ्रष्टाचार करने का आरोप लगाया था।

मुकेश गुप्ता पर माणिक मेहता ने लगाए थे गंभीर आरोप

2018 से पहले भाजपा सरकार में प्रभावशाली अफसर रहे मुकेश गुप्ता पर उन्होंने कई गंभीर आरोप लगाए। राज्य में कांग्रेस की सरकार आने के बाद साल 2020 में माणिक मेहता ने लोक आयोग में भी शिकायत दर्ज कराई थी, जिस पर आयोग ने जांच कर राज्य शासन से सीबीआई जांच कराने की अनुशंसा कर दी थी।

लोक आयोग की कार्रवाई के खिलाफ लगाई थी याचिका

पूर्व आईपीएस मुकेश गुप्ता ने लोक आयोग की जांच और कार्रवाई को हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। उन्होंने एडवोकेट मलय श्रीवास्तव के माध्यम से याचिका दायर कर बताया कि आयोग ने अपने अधिकार क्षेत्र से आगे जाकर अवैधानिक तरीके से सीबीआई जांच कराने की अनुशंसा की है।

याचिका पर सीनियर एडवोकेट राजीव श्रीवास्तव ने बहस की और बताया कि आयोग की यह कार्रवाई अवैधानिक है। सभी पक्षों को सुनने के बाद हाईकोर्ट ने लोक आयोग की कार्रवाई और सीबीआई जांच की अनुशंसा को निरस्त कर दिया है।

मिक्की मेहता ट्रस्ट में भ्रष्टाचार का आरोप

दरअसल, माणिक मेहता का आरोप है कि मिक्की मेहता मेमोरियल ट्रस्ट के नाम पर राज्य शासन से तीन करोड़ रुपए का अनुदान लिया था। इस अनुदान राशि के जरिए गरीबों का मुफ्त में मोतियाबिंद का आपरेशन होना था।

आरोप है कि पुलिस अफसर रहे मुकेश गुप्ता ने इस रकम का उपयोग अपने प्राइवेट लोन जमा करने में किया है। इसी आरोपों के आधार पर लोक आयोग ने जांच कर कार्रवाई की थी।

फिलिपींस को ब्रह्मोस की आपूर्ति , चीन को लग सकती है मिर्ची

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-रूस के संयुक्त उपक्रम द्वारा विकसित ब्रह्मोस मिसाइल की फिलिपींस को आपूर्ति के साथ ही वह इस मिसाइल प्रणाली को हासिल करने वाला पहला विदेशी राष्ट्र बन गया है। यह एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने शुक्रवार को तब हासिल किया जब देश में लोकसभा चुनाव के पहले चरण के लिए मतदान हो रहा था। जनवरी 2022 में ब्रह्मोस एयरोस्पेस प्राइवेट लिमिटेड (बीएपीएल) ने फिलिपींस के राष्ट्रीय रक्षा विभाग के साथ 37.49 करोड़ डॉलर के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए थे। इसमें फिलिपींस की नौसेना के लिए तट-आधारित एंटी-शिप मिसाइल सिस्टम की आपूर्ति शामिल थी। यह कदम भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति तथा इसके समग्र भारत-प्रशांत विजन में फिलिपींस की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। नई दिल्ली ने इसे जिम्मेदार रक्षा निर्यात को बढ़ावा देने की भारत सरकार की नीति के लिए एक महत्वपूर्ण कदम करार दिया है। फिलिपींस के रक्षा मंत्रालय ने स्वीकार किया कि ब्रह्मोस उनके देश की संप्रभुता और संप्रभु अधिकारों को कमजोर करने के किसी भी प्रयास के खिलाफ प्रतिरोध प्रदान करेगा, खासकर पश्चिमी फिलिपीन सागर में। वैसे भारत के इस कदम से चीन को मिर्ची लग सकती है। ?दरअसल साउथ चाइना सी में फिलीपींस का स्पार्कली आइलैंड्स को लेकर विवाद चलता रहता है। ?चीन के चाइना छोटे आइलैंड वाले देशों को धमकाया जाता है, क्योंकि यह देश सैन्य रूप से इतने मजबूत नहीं है। इंडिया की तरफ से भी यह पहली बार होगा जब चाइना के दुश्मनों को कोई हथियार बेचा गया हो। फिलिपींस राष्ट्रपति पहले ही कह चुका है कि हम पीछे नहीं हटने वाले हैं और हम अपनी सेना का आधुनिकीकरण करने जा रहे हैं। चीन की आक्रामकता को रोकने के लिए एक सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है और फिलीपींस जैसे देशों को हथियारों की दौड़ में चीन प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रेरित कर रहा है। प्रारंभ में, फिलिपींस को तीन बैटरियों की आपूर्ति की जाएगी, जिसमें छह लॉन्चर और मिसाइलें शामिल हैं। अनुबंध में ऑपरेटरों और देखरेख करने वालों के लिए प्रशिक्षण के साथ-साथ आवश्यक एकीकृत लॉजिस्टिक्स सपोर्ट (आईएलएस) पैकेज भी शामिल है।

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने पिछले महीने फिलिपींस की अपनी यात्रा के दौरान वहां के राष्ट्रपति फर्डिनेंड आर. मार्कोस जूनियर से मुलाकात की, और उन्हें भारत-फिलिपींस साझेदारी में हाल के विकास और द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के लिए संयुक्त पहल के बारे में जानकारी दी। फिलिपींस के विदेश मंत्री एनरिक ए. मनालो से मुलाकात के अलावा जयशंकर ने रक्षा और समुद्री सुरक्षा में बढ़ते सहयोग पर चर्चा करने के लिए फिलिपींस के राष्ट्रीय रक्षा सचिव गिल्बर्ट टेओडोरो से भी मुलाकात की।

चुनाव के दौरान यात्राओं की अनुमति पर तीन दिन के भीतर फैसला लें : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। उच्चतम न्यायालय ने चुनाव के दौरान किसी भी सभा पर रोक लगाने के व्यापक आदेश जारी किए जाने पर शुक्रवार को आश्चर्य व्यक्त किया और सक्षम अधिकारियों को मौजूदा आम चुनावों के दौरान 'यात्राएं' आयोजित करने की अनुमति के लिए किसी भी व्यक्ति की ओर से की गयी याचिका पर तीन दिन के भीतर निर्णय लेने का निर्देश दिया। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने सामाजिक कार्यकर्ता अरुणा रॉय और निखिल डे की याचिका पर यह निर्देश दिया। पीठ के समक्ष याचिकाकर्ता सुश्री रॉय और डे की ओर से पेश अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने दावा किया कि चुनाव आयोग ने आम चुनाव होने तक सभी सभाओं, बैठकों, प्रदर्शनों आदि पर रोक लगा दी है। पीठ ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा, ऐसा आदेश कैसे जारी किया जा सकता है। भूषण ने संविधान पीठ के पहले के फैसलों का जिक्र करते हुए कहा कि जब तक शांति भंग होने की कोई ठोस वास्तविक आशंका न हो, सीआरपीसी की धारा 144 के तहत कोई आदेश जारी नहीं किया जा सकता है।

पीठ के कहने पर भूषण ने अदालत में ऐसा ही एक नोटिस को पढ़ा। उन्होंने (श्री भूषण) बाड़मेर में जारी एक नोटिस का हवाला देते हुए कहा, बाड़मेर के जिला मजिस्ट्रेट द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि ईसीआई द्वारा लोकसभा चुनावों की (16 मार्च को) घोषणा की गई है। ईसीआई के निर्देशों के अनुसार, लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से कराए जाने चाहिए।

बीएसपी कर्मचारियों को उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए मिला सम्मान

बिना डाऊन टाईम रिकार्ड किए 163 रेलों की रोल करके किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

भिलाई (समय दर्शन)। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र प्रबंधन सदैव अपने कर्मचारियों के ईमानदार और उल्लेखनीय प्रयासों के लिए उन्हें सम्मानित करता रहा है। कर्मचारियों को उनके अनुकरणीय प्रयासों, कार्यस्थल पर सराहनीय कार्य, सुरक्षा प्रोटोकॉल के सचेत अनुपालन, अतुलनीय सहयोग, उत्कृष्ट प्रदर्शन या इस तरह के उल्लेखनीय कार्यों के लिए विभिन्न पुरस्कार या सम्मान प्रदान किये जाते हैं। संयंत्र के कर्मचारियों को सम्मानित करने का मुख्य उद्देश्य, सुरक्षा के मानक मापदंडों का पालन करते हुए, संगठनात्मक उद्देश्यों को पूर्ति करके कार्यस्थल पर उनके द्वारा किये गए बेहतर प्रदर्शन को प्रोत्साहित करना है।

ऐसी ही एक पहल में, कर्मचारियों को किसी विशेष कार्य या शिफ्ट के दौरान उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विभाग प्रमुख द्वारा प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। भिलाई इस्पात संयंत्र के मुख्य महाप्रबंधक (यूआरएम) अनीश सेनगुप्ता ने अपने कर्मचारियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रशंसा पत्र के साथ सम्मानित किया। इनमें प्रबंधक (यूआरएम) प्रवीण जायसवाल, प्रबंधक (यूआरएम) श्री पवन कुमार जायसवाल, सीनियर ऑपरेटिव दीपक कुमार खडातकर शामिल है। श्री सेनगुप्ता ने संबंधित

अधिकारियों की सराहना करते हुए प्रशस्ति पत्रों में यह उल्लेख किया कि, मैं आपके द्वारा किए गए अच्छे काम की सराहना करता हूं। मुझे आशा है, कि आप भविष्य में भी अपने ईमानदार प्रयास जारी रखेंगे और दूसरों के बीच उत्कृष्टता की संस्कृति का प्रसार करेंगे। विगत दिनों प्रवीण जायसवाल को बी शिफ्ट में, बिना कोई डाउनटाइम रिकॉर्ड किए 163 रेलों को रोल करके उत्कृष्ट प्रदर्शन, सूक्ष्म योजना और उसके प्रशंसनीय क्रियान्वयन हेतु प्रशंसा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इन्होने पूरे शिफ्ट के दौरान अनुभाग को तनाव-मुक्त बनाये रखा और अपने अथक प्रयास और निरंतर निगरानी से इस उपलब्धि को संभव बनाया। शॉप्स के उत्पादन में इनका उल्लेखनीय योगदान है और ऐसा करके इन्होने प्रदर्शित किया है कि उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से प्रभावी संचालन का प्रबंधन सम्भव है।

पिछली पाली में ब्रेकडाउन के कारण, विजुअल इंस्पेक्शन के लिए रेल की उपलब्धता बहुत कम थी। रेल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए श्री पवन कुमार जायसवाल ने ए शिफ्ट में, रेल की 162 नग रोलिंग कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इनकी सक्रिय योजना और उसके कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप यह लक्ष्य हासिल हुआ। शिफ्ट के दौरान इनके अथक प्रयास एवं सतत् निगरानी की सराहना हेतु पवन कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।

दीपक ने गैस नेटवर्क तैयार कर मिल को लम्बे ब्रेकडाऊन से बचाया

दीपक कुमार खडातकर ने बी शिफ्ट में गैस लाइन सर्किट में नाइट्रोजन को शुद्ध करके आपने गैस नेटवर्क को तैयार किया और फर्नेस के सामान्य संचालन में अपना सराहनीय योगदान दिया। रात करीब 9:25 बजे वोल्टेज कम होने के कारण फर्नेस फिर से बंद हो गया। मुख्य शीतलन लाइन निष्क्रिय थी। इसलिए पंप हाउस के डीजल पंप को चालू कर, सेकेंडरी कूलिंग लाइन को निर्बाध उत्पादन हेतु तुरंत चालू किया गया। इनकी सतर्कता और एसओपी के त्वरित निष्पादन ने फर्नेस को सामान्य स्थिति में वापस लाया। ऐसा करके इन्होने मिल को लंबे समय के ब्रेकडाउन से बचाया और अपने उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मान प्राप्त किया।

भारत दुनिया की पाँचवीं अर्थव्यवस्था का देश बना

मोदी सरकार ने सेना का आधुनिकीकरण कर भारतीय सीमाओं को अभेद्य बनाया - संतोष पांडे

राजनांदगाँव (समय दर्शन)। भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार संतोष पांडे ने आज खैरागढ़ व कबीरधाम जिले के ग्रामीण क्षेत्रों का व्यापक दौरा करते हुए कहा कि वर्तमान आम चुनाव देश के लिए अत्यंत महत्व के हैं, भारत के उज्जवल भविष्य को गढ़ने वाले भी हैं, व नई पीढ़ी को दिशा भी दिखाने वाले रहेंगे। उन्होंने कहा कि जिस तरह से आजादी के बाद देश की बुनियादी समस्याओं का समाधान किया जाना था वह नहीं हो पाया। अंग्रेजों के आक्रमण के पहले हम विश्व के सबसे समृद्ध देश हुआ करते थे, किन्तु 200 वर्षों के अंग्रेजी शासनकाल ने हमारे देश के ताने-बाने को ध्वस्त, कर दिया अंग्रेजों ने कूटरचना करके भारतीय संस्कृति में पश्चिमी सभ्यता थोपने की चाल चली और देश का यह दुर्भाग्य रहा की आजादी के बाद कांग्रेस का नेतृत्व जिन हाथों में आया वे अंग्रेजीयत संस्कारों से ओतप्रोत रहें, उन्हे देश की मौलिक आवश्यकताओं व सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान नहीं था, फलस्वरूप

इनके लंबे शासनकाल में देश पटरी से नीचे उतर गया।

भाजपा मीडिया सेल द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार श्री पांडे ने आगे कहा कि इनके शासनकाल में प्रशासन में जड़ता आ गई थी, भ्रष्टाचार खूब फल-फूल रहा था गरीब और गरीब तथा अमीर और अमीर होते चले गए। विकास परियोजनाओं की जड़ में भ्रष्टाचार का नस्तर लग गया तथा वह दशकों तक अधूरी की अधूरी रह जाती रही। आम लोगों के चलने के लिए ना तो अच्छी सड़के बन पा रही थी, और ना ही सेना को आधुनिक हथियार मिल पा रहे थे, ना ही बुलेट प्रूफ जैकेट और तो और उन्हे अच्छे किस्म के जूते तक उपलब्ध नहीं थे। देश की हालत बद् से बदतर जैसी हो गई थी कही बांगलादेश की घुसपैठ तो कही पाकिस्तान पोषित आतंकवादियों के हमले हो रहे थे, भारत की दशा एक दयनीय देश के समान हो गई थी।

मोदी की सरकार बनी, तब कही जाकर देश की माली हालत में सुधार आना प्रारंभ हुआ

श्री पांडे ने आगे कहा कि फिर देश में राम मंदिर का आंदोलन आया, राष्ट्रीय विचारों की स्थापना हुई, फिर पहले अटल जी उसके बाद मोदी की सरकार बनी, तब कही जाकर देश की माली हालत में सुधार आना प्रारंभ हुआ।

मोदी जी ने जहां देश को आंतरिक व बाह्य खतरों से मुक्त कराया वही विकास का नया इतिहास रचा। सेना का आधुनिकीकरण किया गया एवं भारतीय सीमाओं को अभेद्य बनाया गया। आर्थिक दृष्टि से भारत को मजबूत स्थिति में ले जाते हुए दुनिया की पाँचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित किया विश्व के किसी भी कोने में यदि कोई भारतीय संकट में फसा तो उसे सुरक्षित भारत की धरती पर लाने का अभिनव प्रयत्न हुआ।

पूरी दुनिया में भारत यह संदेश देने में सफल रहा की हम कमजोर नहीं हैं, एक शक्तिशाली देश के रूप में खड़े हैं और यह पहचान सुनश्चित की। आजादी के बाद पहली बार 25 करोड़ से अधिक लोग गरीबी रेखा से ऊपर आये, देश की आबादी के 80 करोड़ लोगों को अनवरत रूप से मुफ़्त राशन देकर रोटी की समस्या का निराकरण हुआ। करोड़ों लोगों को पक्के मकान दिये गए, करोड़ों किसानों को किसान सम्माननिधि से नवाजा गया, करोड़ों महिलाओं को उज्वला गैस कनेक्शन देकर राहत पहुचाई गई, लाखों-लाख लोगों को रोजगार के नये अवसर प्रदान किया गया इस तरह देश तेजी से प्रगति पथ की ओर आगे बढ़ने लगा किन्तु अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए यह जरूरी हैं की 2024 में फिर एक बार मोदी जी कि सरकार बने व अबकी बार- 400 पार का नारा सार्थक हो।

संक्षिप्त समाचार

त्रिदिवसीय अखंड रामायण कथा का आयोजन 21 तक

बसना (समय दर्शन)। बसना ब्लॉक अंतर्गत ग्राम बिछिया टांड़ा पारा में त्रिदिवसीय अखंड रामायण कथा का आयोजन 21 अप्रैल तक रखा गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 19/04/2024 को प्रात: 10 बजे कलश यात्रा निकाली जायेगी। कलशयात्रा के पश्चात् विभिन्न क्षेत्रों से पधारे रामचरित मानस मंडलियों के द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम चंद्र जी के जीवन चरित्र पर आधारित श्रीराम भजन गायन व कथा का वाचन किया जायेगा। ग्राम वासियों के द्वारा इस कार्यक्रम को भव्य रूप देने के लिए व्यापक तैयारियां की जा रही है।

बता दें कि दिनांक 19 अप्रैल को तोरण द्वार मानस परिवार झलप, सांवरिया मानस परिवार छतौद तिल्दा, शीतला मानस परिवार डोंगरीपाली, दिनांक 20 अप्रैल को आराधना मानस परिवार गूल्लू आरंग, रागिनी मानस परिवार ओडेकेरा जैजेपुर, तुलसी मानस मंडली सांई सराईपाली, शारदा मानस परिवार भरदागोड़ राजनांदगांव, शिवम मानस परिवार चरीपड़ा दियानडबरी, श्री परमेश्वर मानस परिवार सेमरतरा राजिम और दिनांक 21 अप्रैल को सुर संजना मानस परिवार धमतरी, श्रीराम मानस परिवार खलना नवापारा उड़ीसा, आंचल मानस परिवार रिकोकला सपोस के द्वारा सुमधुर भजन की प्रस्तुति दी जायेगी। दिनांक 21 अप्रैल को पूर्णाहूति के साथ कार्यक्रम का समापन होगा।

कलेक्टर साहू ने ली वन विभाग की समीक्षा बैठक

सारंगढ़-बिलाईगढ़ (समय दर्शन)। कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में वन विभाग के कार्यों की समीक्षा की। कलेक्टर ने सर्वप्रथम विभागीय कार्यों की सामान्य जानकारी लिए। इसी क्रम में वन एवं वन्य प्राणियों की सुरक्षा हेतु हेल्पलाइन, नवीन जिला से संबंधित स्टाफ एवं आफिस की अद्यतन जानकारी, विभागीय योजनाओं की जानकारी, विभाग द्वारा किए जा रहे उल्लेखनीय कार्य, पशुओं द्वारा क्षति पहुंचाए जाने पर दिया जाने वाला मुआवजा राशि, वन क्षेत्रों को आग से बचाने के लिए किए जाने वाले उपाय, हाथियों की संख्या एवं उनके गतिविधि की जानकारी, वन्य जीवों की क्रासिंग, मानव-हाथी द्वंद, नर्सरी में पौधों के प्रकार एवं अन्य विभागीय जानकारी ली एवं आवश्यक निर्देश दिए। इस अवसर पर परियोजना निदेशक हरिशंकर चौहान एवं सारंगढ़ और बिलाईगढ़ वन परिक्षेत्र के समस्त वन अधिकारीगण उपस्थित थे।

निर्वाचन व्यय की सतत मानीटरिंग एवं रिपोर्ट तैयार कर प्रस्तुत करने के निर्देश

दुर्ग। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दुर्ग लोकसभा क्षेत्र के लिए अधिकृत व्यय प्रेक्षक प्रसन्ना वी. पत्तनसेठ्ठी ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में सहायक व्यय प्रेक्षकों एवं लेखा टीम की बैठक ली। बैठक में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी सम्मलित हुई। व्यय प्रेक्षक ने निर्देशित किया कि निर्वाचन के दौरान व्यय से संबंधित समस्त गतिविधियों पर विशेष निगरानी रखी जाये।जिले के विधानसभा क्षेत्र दुर्ग ग्रामीण, दुर्ग शहर, भिलाई नगर, वैशाली नगर, अहिवारा, पाटन, साजा, बेमेतरा एवं नवागढ़ के लिए अलग-अलग सहायक व्यय प्रेक्षक एवं लेखा टीम नियुक्त किया गया है। बैठक में व्यय प्रेक्षक प्रसन्नाने निर्वाचन के दौरान व्यय से संबंधित समितियों व्यय निगरानी सेल, लेखा टीम, फ्लाईंग स्कायड, स्थैतिक निगरानी दल, मीडिया प्रमाणन एवं अनुवीक्षण समिति, व्यय लेखा, वीडियो अवलोकन दल आदि के विषय में जानकारी ली। उन्होंने आचार संहिता के दौरान अभ्यर्थियों द्वारा किए जाने वाले व्यय की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि अभ्यर्थी के व्यय अनुवीक्षण के लिए विशेष ध्यान देते हुए कार्य करने की आवश्यकता है। व्यय अनुवीक्षण कार्य के लिए गठित टीम अभ्यर्थी के खर्च की निगरानी करें। व्यय कार्यों के लिए गठित टीम व्यय के रिकार्ड मेंटेन करते हुए डेली रिपोर्ट निर्धारित प्रारूप में उपलब्ध कराएं। उन्होंने कहा कि एकाउंटिंग टीम प्रतिदिन प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।एसएसटी, एफ्एसटी, वीवीटी और वीएसटी की टीम द्वारा की जाने वाली कार्यवाही के संबंध में जानकारी ली। व्यय प्रेक्षक ने निर्देशित किया कि फ्लाईंग स्कायड, स्थैतिक निगरानी दल तथा निर्वाचन व्यय से संबंधित टीमें विभिन्न जांच नाकों सहित अन्य स्थानों पर अलर्ट रहें। व्यय प्रेक्षक ने गत विधानसभा निर्वाचन के दौरान व्यय से संबंधित समस्याओं एवं चुनौतियों के संबंध में चर्चा करते हुए कहा कि लोकसभा निर्वाचन के दौरान व्यय लेखा संबंधी कोई समस्या न रहे इस दिशा में सभी को कार्य करना है।इस दौरान डिप्टी कलेक्टर महेश राजपूत, सहायक व्यय प्रेक्षक, लेखा अधिकारी सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

डाक मतपत्र से मतदान के लिए 3 सुविधा केन्द्र स्थापित

मुंगेली। लोकसभा निर्वाचन 2024 कार्य में लगे जिले के अधिकारी-कर्मचारियों को डाक मतपत्र से मतदान की सुविधा दी जाएगी। इसके लिए जिले में 03 सुविधा केन्द्र स्थापित किए गए हैं। उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती मेनका प्रधान ने बताया कि जिनका नाम जिले के मतदाता सूची में पंजीकृत हैं तथा डाक मतपत्र हेतु आवेदन किए हैं, वे जिला कलेक्टोरेट स्थित जनदर्शन कक्ष में 30 अप्रैल से 02 मई तक प्रात: 09 से शाम 05 बजे के बीच डाक मतपत्र से मतदान कर सकते हैं। इसी तरह अनुविभागीय अधिकारी राजस्व कार्यालय लोरमी एवं अनुविभागीय अधिकारी राजस्व कार्यालय में मुंगेली में 03 मई से 05 मई तक प्रात: 09 से शाम 05 बजे के बीच डाक मतपत्र से मतदान किया जा सकता है।

वनांचल क्षेत्र में घर-घर जाकर पूर्व सांसद मधुसूदन ने किया सघन जनसंपर्क

वर्तमान सांसद एवं भाजपा प्रत्याशी को विजयी बनाने के लिये पूर्व सांसद मधु ने दिनभर किया जनसंपर्क

राजनांदगॉव (समय दर्शन)। पूर्व सांसद एवं प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष मधुसूदन यादव ने वनांचल क्षेत्र मोहला-मानपुर-चौकी जिला अंतर्गत स्थित विभिन्न ग्रामों में धुंआधार जनसंपर्क कर भाजपा के पक्ष में प्रचार प्रसार किया। लोक सभा आम निर्वाचन 2024 में भाजपा प्रत्याशी एवं वर्तमान सांसद संतोष पाण्डे को भारी मतों से विजयी बनाने के अभियान में जुटे भाजपा पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और स्थानीय नागरिकों सें मोहला एवं चौकी विकासखंड के विभिन्न ग्रामों क्रमश: मरकाटोला, कोर्रामटोला, रेंगाकठेरा, डुन्डेरा, गोटाटोला,

पीड़िंगपार, खुर्सीटीकूल, मोहड़, आतरगॉव, मचानदूर में सघन जनसंपर्क कर भाजपा के पक्ष में मतदान करने के लिये प्रेरित किया। इस दौरान प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष मधुसूदन यादव के साथ राजनांदगॉव नगर निगम के नेता प्रतिपक्ष किसुन यदु सहित एम.एम.सी. जिले के प्रमुख भाजपा नेतागण चुनाव प्रभारी श्रीमती नम्रता सिंह, जिला अध्यक्ष मदन साहू, जनपद सदस्य नरसिंह भण्डारी, मंडल अध्यक्ष रतन तारम, महामंत्री कमल तापड़िया सहित वरिष्ठ भाजपा नेतागण सचिन जैन, लखन कलामे, विजय जैन, ओम प्रकाश मिश्रा, राजू डोंगरे, सुरेश डोंगरे एवं साथी उपस्थित रहकर भाजपा प्रत्याशी सांसद संतोष पाण्डे के पक्ष में पूरे जोश एवं एकजुटता के साथ सतत् प्रचार प्रसार करते दिखे। पूर्व सांसद मधुसूदन ने इन ग्रामों में सुबह 11 बजे से लेकर शाम 6 बजे तक सतत् जनसंपर्क के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की केन्द्रीय योजनाओं के साथ साथ छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के 15 वर्षो के स्वर्णिम कार्यकाल की उपलब्धियों को भी गिनाया और जनता से भाजपा के पक्ष में मतदान की अपील की। पूर्व सांसद मधुसूदन ने वर्तमान सांसद संतोष पाण्डे के उपलब्धियों एवं विकास एवं निर्माण कार्यो का भी उल्लेख कर क्षेत्र में भाजपा का प्रचार प्रसार किया। देर शाम वरिष्ठ भाजपा नेता मधसूदन ने स्थानीय भाजपा संगठन कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों से मुलाकात कर चुनावी रणनीति पर संगठनात्मक चर्चा की और सभासदों से चुनावी प्रचार-प्रसार कार्यो में पूरी ताकत से जुट जाने का आव्हान किया।

लीफआर्टिस्ट विकास शांडिल्य ने अनोखी कलाकारी से किया मतदाताओं को जागरूक

पीपल के पत्ते पर धर्म से ऊपर उठकर मदान करने का दिया संदेश

धमतरी (समय दर्शन)। लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत जिले में अनेकों स्वीप गतिविधियां संचालित की जा रहीं हैं। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री नम्रता गांधी को आज एक और अनोखी कलाकारी भेंट की गई। दरअसल जिले के वनांचल नगरी विकासखण्ड स्थित ग्राम मोदे के लीफ आर्टिस्ट एवं युवा कवि ने पीपल के पत्तों पर ग्लोब, भारत के नक्शा पर उंगली के निशान, संसद भवन और हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख इसाई चारों धर्म के व्यक्तियों को दर्शाता पीपल का पत्ते पर उकेरा, जिसे आज कलेक्टर सुश्री गांधी को उनके कक्ष में आकर भेंट किया। इस अनोखी कलाकारी और मतदाताओं के जागरूकता के लिए की गई उनके हुनर की कलेक्टर ने काफी प्रशंसा की। गौरतलब है कि विकास शांडिल्य देश-विदेश और राज्य के सभी धर्म के महान पुरुषों का पीपल के पत्ते और अन्य पत्तों पर भी फोटो बना चुके हैं।

मीडिया प्रतिनिधियों ने पहली बार डाक मतपत्र के जरिए किया मतदान

धमतरी (समय दर्शन)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा अनिवार्य सेवाओं के रूप में 10 सेवाओं को अधिसूचित किया गया है, जिसमें स्वास्थ्य विभाग, विद्युत विभाग, रेल परिवहन, बीएसएनएल, डाक एवं टेलीग्राम विभाग, दूरदर्शन, ऑल इण्डिया रेडियो, छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी दुग्ध संघ मर्यादित, भारतीय खाद्य निगम और ऐसे मीडियाकर्मी जिन्हें प्राधिकार पत्र जारी हुआ है, शामिल हैं। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री नम्रता गांधी द्वारा लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत निर्वाचन कर्तव्य पर तैनात सभी अधिकारी, कर्मचारियों के लिए डाक मतपत्र और अनिवार्य सेवा अंतर्गत आने वाले कर्मचारियों और मीडिया प्रतिनिधियों को अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए सुविधा केन्द्र स्थापित किया गया है। इसके तहत अनुविभागीय अधिकारी राजस्व नगरी, तहसील कार्यालय कुरूद और तहसील कार्यालय धमतरी में 19, 20, 21 अप्रैल को सुबह 9 से शाम 5 बजे तक सुरक्षा बल एवं अनिवार्य सेवाओं के लिए सुविधा केन्द्र स्थापित किया गया है।

जिले के पत्रकारों को पहली बार आयोग द्वारा दी गई डाक मतपत्र के जरिए मतदान की सुविधा के लिए आभार व्यक्त किया।

पीएम मोदी की प्रेरणा और मार्गदर्शन में ऐतिहासिक काम हो रहा- विजय शर्मा

मोदी सरकार की योजना गरीबों के लिए

कवर्धा (समय दर्शन)। उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने जिले के रेंगाखार, तरेगांव, कुंडा में आज जनसंपर्क कर क्षेत्र की जनता से मुलाकात की। देश को सशक्त नेतृत्व देने वाले नरेंद्र मोदी को पुन: प्रधानमंत्री बनाने और क्षेत्र से सांसद प्रत्याशी संतोष पाण्डेय को सांसद बनाने हेतु सघन जनसंपर्क और प्रचार किया।

उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में भारत ने आधारभूत सुविधा, विनिर्माण, संचार, अनुसंधान में कई नए आयाम छुए हैं। नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद पिछले 10 वर्ष में कोई घोटाला नहीं हुआ है। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 समाप्त की गई है। अयोध्या में दिव्य राम

मंदिर का निर्माण हुआ है। सीएए कानून लागू हो गया है। उन्होंने कहा प्रधानमन्त्री श्री मोदी ने जनमन योजना शुरू की है। यह योजना एक तरह का अभियान है, जिसका पूरा नाम प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान है। इस योजना के माध्यम से आदिवासी समाज के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य शिक्षा, रोजगार के अवसर जैसी बुनियादी सुविधाओं से जोड़ा जाएगा। इस योजना के तहत पहली किश्त जारी कर दी गई है। अनेक स्थानों पर सुदूर वनांचल क्षेत्रो में इसका लाभ पहुचने लगा है। इस योजना के तहत सड़क और टेलीफ्रेन कनेक्टिविटी, पावर, सुरक्षित घर, पीने का साफ पानी, सफाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण बेहतर ढंग से पहुंच सके इस दिशा में मोदी जी कदम आगे बढ़ा चुके है। इसका लाभ कवर्धा जिले में भी करोड़ो रूपये की 41 सड़कों के रूप में वनांचल क्षेत्र को मिला है।

उन्होंने कहा देश में पहली बार उनके कार्यकाल में देश के सर्वोच्च पद पर महिला आदिवासी रास्ट्रपति बनती है। छत्तीसगढ़ में असली आदिवासी बेटा विष्णुदेव मुख्यमंत्री बनते हैं और डबल ईंजन की सरकार बनते ही मोदी जी की ग्यारंटी तय सीमा में पूरा होने लगता है। छत्तीसगढ़ सरकार बनने के बाद 18 लाख प्रधामन्त्री आवास जारी हो गए। किसानो के उपज का सर्वोच्च खरीदी, विवाहित बहनो, माताओं को हर माह 1 हजार रूपए मिलने लगा है। उन्होंने कहा देश के साथ साथ राज्य के विकास के लिए डबल ईंजन की सरकार जरूरी है। उन्होंने कहा भारत के सांस्कृतिक गौरव को पुनरस्थापित करने के साथ साथ तेजी से विकसित भारत बनाने के लिए रात दिन मेहनत करने वाले मोदी जी के संकल्प को पूरा करना है अबकी बार 400 पार कर भारी बहुमत से नरेंद्र मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाना है।

गायत्री साहू को श्रद्धांजलि देने बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि व वार्डवासी पहुंचे उनके निवास पर

पार्षद गायत्री साहू की सेवाभावी कार्यो को यादकर दी उन्हें श्रद्धांजलि

दुर्ग (समय दर्शन)। नगर निगम की वरिष्ठ एवं वार्ड नंबर 52 की सक्रिय पार्षद श्रीमती गायत्री साहू की निधन के पश्चात दशगात्र कार्यक्रम में श्रद्धांजलि देने बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि,गणमान्य नागरिक व वार्डवासी पहुंचकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके द्वारा विगत 20 से अधिक वर्षों में एक अच्छे जनप्रतिनिधि के रूप में किए गए कार्यों को याद किया। इस दौरान वार्ड के लोगो ने दशगात्र में शामिल होने आए विधायक गजेंद्र यादव महापौर धीरज बाकलीवाल से स्व.गायत्री साहू के कार्यकाल में वार्ड में निर्मित अनेक विकास कार्य के किसी एक संस्थान को उनके नाम पर नामकरण किए जाने मांग रखी श्रीमती गायत्री साहू बोरसी वार्ड से लगातार चार बार से पार्षद के रूप में निर्वाचित होती रही है तथा वे कुछ समय

के लिए निगम में एल्डरमेन के रूप में भी सेवा दी है उनके सौम्य व निश्चल व्यवहार से भाजपा ही नही कांग्रेस के लोग भी प्रभावित थे उन्होंने ग्रामीण परिवेश के वार्ड में तेजी से विकास कराई है किंतु विगत विगत 14 अप्रेल को स्वास्थ्यगत अस्वस्थ्यता के चलते उनका निधन हो गया अंतिम संस्कार में भारी संख्या में लोग शामिल हुए थे तथा अंतिम यात्रा में भाजपा की ओर से जिलाध्यक्ष जितेंद्र वर्मा द्वारा कमल का झंडा ओढ़ाकर सम्मान भी किया गया था और आज दशगात्र में बड़ी संख्या में लोग शामिल होकर श्रद्धांजलि अर्पित किए। श्रद्धांजलि देने वालो में शहर विधायक गजेंद्र यादव दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर महापौर धीरज बाकलीवाल सभापति राजेश यादव नेता प्रतिपक्ष अजय वर्मा पूर्व सभापति दिनेश देवांगन निगम के एम आई सी सदस्य संजय कोवले भोला महोबिया,दीपक साहू,ज्ञानदास बंजारे सहित जिला महामंत्री सुरेंद्र कौशिक उपाध्यक्ष राजेंद्र पाध्ये विनायक नातू मंडल अध्यक्ष डॉ सुनील साहू,लुकेश बघेल पार्षद गण काशीराम कोसरे चंद्रशेखर चंद्राकर नरेंद्र बंजारे शिवेंद्र परिहार,अरुण सिंह लीना दिनेश देवांगन शशि द्वारका साहू कुमारी बाई साहू,कमल देवांगन,कुलेश्वर साहू,गुड्डू यादव गुलाब वर्मा,विजेंद्र भारद्वाज प्रेमलता साहू पूर्व पार्षद लिखन साहू,दिलीप साहू,उमेश यादव, रत्ना नामदेव,राहुल पंडित महिला मोर्चा की वाणी सोनी कुमुद बघेल चंपा साहू श्वेता बक्शी,संजय साहू,पोषण साहू भोला यादव सुरेंद्र साहू,मन्नू साहू,महेंद्र चोपड़ा सहित बड़ी संख्या में पार्षद गण व भाजपा के कांग्रेस के लोग शामिल थे।

सार समाचार

अलग-अलग क्षेत्र से दो दोपहिया पार

रायपुर(समय दर्शन)। अलग-अलग थाना क्षेत्रों से अज्ञात चोर ने दो नग दोपहिया वाहन पार कर दिया। दोनों ही मामलों में पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है। मिली जानकारी के अनुसार ढाचा भवन हाउसिंग बोर्ड कालोनी प्रार्थी स्पर्श झा 30 वर्ष ने आमानाका थाना में शिकायत किया कि वह अपनी बाइक क्रमांक सीजी 04 एचक्यू 4856 को अपने घर के बाहर खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दी। चोरी गए बाइक की कीमत करीब 20 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। वहीं दूसरे मामले में अमलीडीह निवासी गजानंद साहू ने टिकरापारा थाना में शिकायत किया कि वह अपनी एक्टिवा क्रमांक सीजी 04 पीएल 1910 को सर्विस रोड संजयनगर के पास खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए एक्टिवा की कीमत करीब 50 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। दोनों ही मामलों में पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

गांजा तस्करी करते युवक गिरफ्तार

रायपुर(समय दर्शन)। सरस्वती नगर पुलिस ने कबीर चौक के पास गांजा तस्करी करते कार सवार एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से 40 किलो गांजा जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार पुलिस के टीम ने मुखबिर की सूचनरा पर कबीर चौक शनि मंदिर के पास वाहन चेकिंग कर रही थी। तभी कार क्रमांक सीजी 04 एलपी 4515 को रोककर तलाशी लिए, तो उसमें 40 किलो गांजा मिला। पूछताछ में कार सवार आरोपी ने अपना नाम नरेश निहाल 35 वर्ष बताया। मामले में पुलिस ने आरोपी को एनडीपीएस एक्ट के तहत गिरफ्तार कर पूछताछ कर रही है।

युवक से मारपीट

रायपुर(समय दर्शन)। संजयनगर स्थित गरीब नवाब चौक के पास पुरानी रंजिश को लेकर तीन युवकों ने एक युवक से गाली-गलौज कर मारपीट किया। प्रार्थिया की शिकायत पर टिकरापारा पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थिया शेख सबनूर 20 वर्ष गरीब नवाब चौक के पास संजयनगर की रहने वाली है। प्रार्थिया ने थाना में शिकायत किया कि आरोपी नोमान ईरफान व शाहरूख ने पुरानी रंजिश को लेकर प्रार्थिया के पति शेख साहिल से गाली-गलौज कर मारपीट किया। प्रार्थिया की शिकायत पर टिकरापारा पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 294, 506, 34 के तहत अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

लोकसभा प्रत्याशी ने भाटापारा विधानसभा क्षेत्र में किया जनसंपर्क

सुख और समृद्धि की निशानी है कमल का फूल : बृजमोहन अग्रवाल

रायपुर(समय दर्शन)। स्वस्थ जनता और समृद्ध समाज ही भाजपा सरकार की पहचान है। केंद्र और राज्य की डबल इंजन भाजपा सरकार तेजी से काम करते हुए एक नए छत्तीसगढ़ के निर्माण में लगी हुई है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 10 सालों में रायपुर समेत पूरे छत्तीसगढ़ में सड़कों का जाल बिछा है। नई सड़कों के साथ ही पुरानी सड़कों का चौड़ीकरण हुआ। गांव-गांव को सड़क से जोड़ा गया। भाटापारा और सिमगा समेत पूरे रायपुर का विकास भाजपा सरकार की देन है। यह बात रायपुर लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार बृजमोहन अग्रवाल ने गुरुवार को भाटापारा विधानसभा क्षेत्र के सिमगा मंडल में जनसंपर्क के दौरान कही। बृजमोहन ने जनसंपर्क की शुरुवात सिमगा से की यहां से रोड शो के जरिए बनसांकरा, चौरेंगा, दामाखेड़ा, तुलसी, तोरा, चकवाय, दरचुरा, लिमतरा, कोलिहा, रोहरा के साथ ही भाटापारा ग्रामीण मण्डल के देवरी और दतरेंगी में जनता से संपर्क कर भाजपा के लिए वोट मांगे। इस जनसंपर्क अभियान के दौरान बृजमोहन अग्रवाल का जगह-जगह जोरदार स्वागत किया गया पार्टी कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों ने फूलमाला पहनाकर और पटाखे फोड़कर उनका स्वागत किया और उनके पक्ष में जमकर नारेबाजी की। इस अभियान के दौरान बृजमोहन अग्रवाल ने भी जनता को संबोधित किया। उन्होंने नवरात्रि और रामनवमी की बधाई देते हुए कहा कि, माता लक्ष्मी को कमल का फूल पसंद है, जो सुख और समृद्धि का प्रतीक है और भाजपा का निशान भी कमल का फूल है। इसीलिए भाजपा की सरकार समृद्ध छत्तीसगढ़ और समृद्ध राष्ट्र की परिकल्पना को लेकर काम कर रही है। प्रधानमंत्री मोदी के गारंटी और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के सुशासन में छत्तीसगढ़ के गरीब युवा किसान और महिलाएं सभी के हितों का ध्यान रखकर काम किया जा रहा है। आगे भी ऐसे ही काम होता रहे उसके लिए हमको एक बार फिर से रायपुर, छत्तीसगढ़ समेत पूरे देश में कमल का फूल खिलाना है और मोदी को एक बार फिर से प्रधानमंत्री बनाना है।

रायपुर में गर्मी का कहर शुरू पारा 41 डिग्री के पार

रायपुर(समय दर्शन)। राजधानी रायपुर में बदली-बारिश का दौर थमने के बाद गर्मी का कहर शुरू हो गया है। बुधवार को तिल?दा का तापमान 43 डिग्री और रायपुर का तापमान 41 डिग्री तक पहुंच गया। पिछले तीन-चार दिनों से मौसम तंत्रिका के कमजोर होने के बाद रायपुर का मौसम साफ हो गया है। वहीं बादल पूरी तरह से छंटने की वजह से तापमान बढ़ रहा है। तापमान बढ़ने की वजह से अब धूप से जलन महसूस होने लगी है। मौसम विभाग का अनुमान है कि महीने के अंत तक रायपुर में पारा 44 डिग्री को छू सकता है। मौसम विभाग के अनुसार राज?य में हवा की दिशा में बदलाव के साथ आने वाले दिनों में बादल छाने और कहीं-कहीं बारिश होने की संभावना बन सकती है। मगर तापमान और गर्मी पर इसका प्रभाव होने के आसार अब काफी कम है। बुधवार को आसमान पूरी तरह साफ था। अधिकतम तापमान रायपुर में 41 डिग्री सेल्सियस था, जो सामान्य से दो डिग्री सेल्सियस अधिक है। यहां नमी 58-29 प्रतिशत तक थी। दिनभर उमस रही। सूर्य की तपिश बढ़ने से सड़कें भी अब तपने लगी हैं। अधिकतम तापमान माना में 40.4, बिलासपुर में 41, पेण्ड्रारोड में 38.9, अंबिकापुर में 38.2, जगदलपुर में 40.6, दुर्ग में 39.8 और राजनांदगांव में 41.5 डिग्री सेल्सियस था। दिन के साथ-साथ रात का तापमान भी बढ़ रहा है। पिछली रात रायपुर का न्यूनतम तापमान 26.1 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। मौसम केंद्र का अनुमान है कि प्रदेश में अगले दो से तीन दिनों में अधिकतम तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि हो सकती है। उसके बाद तापमान में विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है। मौसम विशेषज्ञ एचपी चंद्रा ने बताया कि अगले दो दिनों में तापमान में लगातार बढ़ोतरी के आसार हैं, इसके बाद हवा की दिशा में बदलाव हो सकता है।

बिरयानी सेंटर का गटर साफ करने उतरे दो युवकों की मौत,कर्मचारियों ने की मिडियाकर्मियों से मारपीट

रायपुर(समय दर्शन)। राजधानी रायपुर के जीई रोड स्थित अशोका बिरयानी सेंटर में 2 कर्मचारियों की मौत होने का मामला सामने आया है। मृतक गटर टैंक की सफाई के लिए उतारे थे। मामले करी शुरुआती जांच में गटर की सफाई के दौरान निकली जहरीली गैस से मौत की आशंका जताई जा रही है। मामले में तेलीबांधा थाना पुलिस ने बिरयानी सेंटर के मैनजेर और कर्मचारी हिरासत में लिया है। वहीं उक्त सेंटर में मामले के संबंध में जानकारी एकत्रित करने पहुंचे मिडियाकर्मियों के साथ दुर्व्यहार होने की बात भी सामने आई है। मिली जानकारी के अनुसार गुरूवार को जीई रोड तेलीबांधा थाना क्षेत्र में अशोका बिरयानी सेंटर में गटर के टैंक में सफाई करने के लिए वहीं को दो कर्मचारी डेविड साहू पिता यशवंत राम उम्र 19साल निवासी खामहरिया जिला धमतरी और नीलकुमार पटेल पिता जगदीश पटेल उम्र 30 साल निवासी खुटादरहा जांजगीर को उतारा गया था। काफी देर तक जब दोनों बाहर नही आये तो सेंटर के अन्य कर्मचारियों ने उन्हें आवाज लगाई जिसपर भी दोनों युवकों ने कोई जवाब नही दिया। जिसके बाद कुछ कर्मचारियों ने गटर में उतर देखा तो दोनों बेहोश थे जिन्हें किसी तरह बाहर निकाला गया। और इसकी सूचना थाने में दी गई। जिसके बाद दोनों युवकों को अस्पताल पहुंचाया गया जहां डॉक्टर ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। इधर इस मामले की सूचना मिलते ही शहर के मिडिया कर्मी बिरयानी सेंटर पहुंचे और वहां मौजूद कर्मचारियों से बात करनी चाही तो सेंटर के कर्मचारियों ने न सिर्फ मिडियाकर्मियो से बदसलुकी कि बल्कि पत्रकारों से मारपीट करते हुए एक निजी चैनल के कैमरामैन का कैमरा भी तोड़ दिया गया। मामले के संबंध में पुलिस का कहना है कि गटर की सफाई के दौरान कर्मचारी बेहोश हो गए। जब वे काफी देर तक बाहर नहीं आए, तो होटल में काम करने वाले दूसरे कर्मचारी गटर के पास गए। आवाज लगाने पर कोई जवाब नहीं आया। जिसके बाद कुछ कर्मचारियों ने गटर में उतरकर दोनों को बाहर निकाला। इधर इस पूरे मामले में सवाल यह उठ रहा है कि यदि गटर में गैस था तो गटर सूखे हुए कैसे मिले और यदि दोनों युवकों की गैस से दम घुटने की वजह से मौत हुई है तो अन्य कर्मचारियों ने उन्हें गटर में उतरकर बाहर कैसे निकाला। वहीं दोनों कर्मचारियों होटल के स्वीपर भी नही थे तो उन्हें गटर में कैसे उतारा गया साथ ही दोनों मृतकों के कपड़े बिल्कुल सूखे हुये थे। साथ ही सवाल करने गये बिरयानी सेंटर के कर्मचारियों का व्यवहार भी मामले में संदेह उत्पन्न कर रहा है। बताया जा रहा है कि यहां आए दिन कर्मचारियों को डराया धमकाया जाता है।

निगम जोन 10 अधिकारियों ने चलाया मतदाता जागरूकता अभियान

एआईजी संजय शर्मा ने दिलवाई शपथ

रायपुर(समय दर्शन)। भारत निर्वाचन आयोग के आदेशानुसार मतदाता जागरूकता अभियान स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत रायपुर जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर डॉक्टर गौरव कुमार सिंह और रायपुर नगर पालिक निगम आयुक्त अबिनाश मिश्रा के निर्देशानुसार रायपुर नगर पालिक निगम क्षेत्र में प्रतिदिन निरन्तरता से चलाया जा रहा है. आज नगर पालिक निगम रायपुर के जोन क्रमांक 10 के तहत डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद वार्ड क्षेत्र के अंतर्गत प्रधानमंत्री आवास योजना परिसर अमलीडीह के रहवासी क्षेत्र में एआईजी (ट्रेफिक) संजय शर्मा के नेतृत्व में सामाजिक संगठन स्टे विथ मी के स्वयंसेवकों सहित एनयूएलएम के तहत महिला स्वसहायता समूहों की महिलाओं, नगर पालिक निगम जोन क्रमांक 10 के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा क्षेत्र के मतदाता रहवासियों को दिनांक 7 मई 2024 को रायपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में होने जा रहे मतदान में मतदाता के रूप में अनिवार्य रूप से अपने मताधिकार का उपयोग करने की सामूहिक शपथ दिलवाई गयी. शत - प्रतिशत मतदान की सामूहिक शपथ सामाजिक संगठन स्टे विथ मी के स्वयंसेवकों, महिला स्वसहायता समूहों की महिलाओं, नगर पालिक निगम जोन क्रमांक 10 के कार्यपालन अभियंता दिनेश सिन्हा, नागेश्वर रामटेके सहित जोन अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित प्रधानमंत्री आवास योजना परिसर अमलीडीह के रहवासी मतदाताओं को एआईजी (ट्रेफिक) संजय शर्मा द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान स्वीप के अंतर्गत दिलवाई गयी. इसके साथ ही सामाजिक संगठन स्टे विथ मी के कार्यकर्त्ताओं, महिला स्वसहायता समूहों की महिलाओं, नगर पालिक निगम जोन नम्बर 10 के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना अमलीडीह आवासीय परिसर के रहवासी मतदाताओं को शत - प्रतिशत मतदान के सम्बन्ध में मतदाता जागरूकता रैली निकालकर मतदान के प्रति जागरूक बनाया गया।

जिले के सात विधानसभा के एक-एक बूथ संभालेंगे दिव्यांग कर्मचारी

रेडक्रास सभाकक्ष में आज हुआ प्रशिक्षण, कलेक्टर ने दिए आवश्यक निर्देश

रायपुर(समय दर्शन)। आगामी लोकसभा चुनाव-2024 में जिले के सभी विधानसभा के एक-एक बूथ दिव्यांग कर्मचारी संभालेंगे। जिनमें पीठासीन अधिकारी सहित पी-01, पी-02 एवं पी-03 सभी दिव्यांग कर्मचारी होंगे। इस प्रकार कुल-28 दिव्यांग कर्मचारियों को जिम्मेदारी दी जा रही है। इनका आज रेडक्रास सभाकक्ष में प्रशिक्षण हुआ। इन्हें संबोधित करते हुए कलेक्टर डॉ गौरव सिंह ने कहा कि यह बहुत गर्व की बात है कि जिले के सभी विधानसभा में एक-एक बूथ में दिव्यांग कर्मचारी निर्वाचन का कार्य संभालेंगे। उन्होंने कहा कि जो प्रशिक्षण दिया जा रहा है उसे बारीकी से समझें। कलेक्टर डॉ सिंह ने कहा कि सामग्री वितरण और संग्रहण और मतदान केन्द्र के समय इन कर्मचारियों के सहायता से विशेष सहायक उपलब्ध कराया जाए, ताकि उन्हें किसी प्रकार की परेशानी ना हो। इनके आवाजाही के लिए छोटी वाहन की व्यवस्था की जाए। सामग्री वितरण संग्रहण के समय विशेष पृथक पंक्ति बनाकर मतदान सामग्री प्रदान किया जाए। कलेक्टर ने कहा कि इन्हें एक सुव्यवस्थित रूट चार्ट बनाकर दी जाए, ताकि आसानी से मतदान केन्द्र के अंदर पहुंच सकें। यहीं नही मतदान केन्द्रों में परीक्षण कर इनके अनुकूल शौंचालय भी बनाए जाएं।

एनसीपी-एससीपी की मौजूदा सांसद और बारामती से उम्मीदवार सुप्रिया सुले ने लोकसभा चुनाव से पहले मुंबई में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया.

मोबाइल नहीं दिया तो कर दी पिटाई

रायपुर(समय दर्शन)। राजधानी के कलक्टोरेट गार्डन में दो अज्ञात युवकों ने चॉइस सेंटर के संचालक को पीट दिया। बताया जा रहा है कि, दोनों युवक ने चॉइस सेंटर के संचालक से मोबाइल मांग रहे थे, नहीं देने पर उसकी पिटाई कर दी। पीड़ित ने मारपीट की शिकायत थाने में दर्ज कराई। पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कर उनकी तलाश में जुट गई। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है। मिली जानकारी के अुनसार, यह घटना बुधवार की है। बताया जा रहा है कि, 17 अप्रैल को चॉइस सेंटर संचालक पिनेश कुमार धृतलहरे अपने भाई विरेंद्र धृतलहरे को जमीन संबंधी दस्तावेज देने के लिए रायपुर कलक्ट्रेट गार्डन पहुंचा था। वह अपने भाई का इंतजार कर रहा था। इस दौरान दो अज्ञात युवक उसके पास आए और मोबाइल मांगने लगे नहीं देने पर उनकी जमकर पिटाई कर दी जिससे पिनेश के बाएं आंख में चोट लग गई। पीड़ित ने बताया कि, दोनों युवक मेकअप कर घूम रहे थे। पिनेश के चिल्लाने पर आरोपी गार्डन की दीवार फांदकर फरार हो गए। आरोपियों के जाने के बाद पीड़ित ने अपने भाई को सूचना दी और सिविल लाइन थाने पहुंचकर अज्ञात आरोपियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। अज्ञात आरोपियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कर कलक्ट्रेट गार्डन में लगे सीसीटीवी कैमरों को पुलिस खंगाल रही है। संदेह के आधार पर कुछ लोगों से पूछताछ भी की जा रही है।

सुप्रिया ने शहीद वाले बयान पर दी सफाई, कहा: बीजेपी कर रही दुष्प्रचार...

रायपुर(समय दर्शन)। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी देवेंद्र यादव के नामांकन रैली में शामिल होने के बाद कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत रायपुर पहुंची। इस दौरान राजीव भवन में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने नक्सलियों को शहीद बताए जाने वाले बयान पर सफाई देते हुए बीजेपी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि, बीजेपी की फेक न्यूज़ फैक्ट्री मेरे बयान को गलत तरीके से चला रही है। साल 2013 में झीरम घाटी में हमने कांग्रेस के पूरे नेतृत्व को इन्हीं नक्सलियों के हाथ खोया था। क्या ऐसे नक्सलियों के साथ हमारी जरा सी भी सहानुभूति हो सकती है? कांग्रेस ने अपने दो-दो प्रधानमंत्री को हिंसा की बलिवेदी में चढ़ते हुए देखा है। प्रदेश की बीजेपी कुत्सित है और वे काट-छांट कर मेरे बयान को चला रहे हैं। उल्लेखनीय है कि, मंगलवार को कांकेर में पुलिस और बीएसएफ के जवानों ने मुठभेड़ में 29 नक?सलियों को ढेर कर दिया गया था। इस मुठभेड़ पर कांग्रेस राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने विवादित बयान दिया था। जहां उनसे नक?सली मुठभेड़ और भूपेश बघेल के बयान के संदर्भ में सवाल पूछे जाने पर उन्होंने कहा था कि, इस पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। मुझे लगता है कि, इसकी गहन जांच होनी चाहिए और उन सब लोग जो शहीद हुए हैं और हमारे कुछ सुरक्षा कर्मी भी घायल हुए हैं। उन सबको हमारी संवेदना है और इसमें राजनीति का कोई सवाल ही नहीं है। कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत के इस बयान के बाद से सियासत गरमा गई थी। सुप्रिया के बयान पर उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा था कि, कांग्रेस पार्टी का ये निकृष्ट बयान लोकतंत्र पर प्रहार है। सुरक्षा बलों के मनोबल और पराक्रम पर प्रहार है। छत्तीसगढ़ और बस्तर की जनता पर प्रहार है। नक्सलियों को शहीद मानने वाली कांग्रेस ने 5 साल बस्तर में इसी मानसिकता से कार्य किया है। इसके अलावा बीजेपी नेता गौरव भाटिया ने ङ्क पर वीडियो शेयर कल लिखा था कि, छत्तीसगढ़ में हमारे सुरक्षाबलों ने 29 नक्सली, जिनमें 2 तो 25ङ्क25 लाख के इनामी थे जिनको मार गिराया गया है। कांग्रेस की प्रवक्ता इन नक्सलियों को शहीद बता रही हैं। इसी को मानसिक और नैतिक दिवालियापन कहते हैं।

सप्ताह में तीन दिन अवैध कब्जे, ग्रीन नेट पर कार्रवाई करने के निर्देश

रायपुर(समय दर्शन)। रायपुर नगर निगम के कमिश्नर अबिनाश मिश्रा ने जोन कमिश्नरों को सड़क पर रखे कंडम वाहन, सड़क पर अतिक्रमण कर ठेले - गुमटी लगाने, सीएनडी वेस्ट और ग्रीन नेट नहीं लगाने वालों पर सप्ताह में तीन दिन कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही कार्रवाइयों की रिपोर्ट मुख्यालय भेजने के लिए कहा है। जिससे उन कार्रवाइयों की समीक्षा की जाएगी। नगर निवेशक निशिकांत वर्मा ने बताया कि कमिश्नर मिश्रा के निर्देश पर कार्रवाई करने के लिए जोन वार सूची बनाई गई है। कौन सा जोन सप्ताह के किन 3 दिनों में कार्रवाई करेगा, इसका भी प्रारूप बनाया गया है। ये कार्रवाई सोमवार से शुक्रवार तक सप्ताह में 5 दिन की जाएगी। निमार्णाधीन मकानों में ग्रीन नेट नहीं लगाने पर जुर्माना लगाकर वहां ग्रीन नेट भी लगाने के निर्देश दिए गए हैं। सड़क पर कंडम पड़े वाहनों को जप्त करने के लिए कहा गया है। साथ सड़क पर अतिक्रमण कर ठेले गुमटियों पर भी कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। जोन कमिश्नरों को ये भी निर्देश दिए गए हैं कार्रवाई का दैनिक प्रतिवेदन मुख्यालय में प्रस्तुत की जाए। जिसकी साप्ताहिक समीक्षा की जाएगी।

संपादकीय...

अलग राज्य बनाने के पीछे राजनीतिक समर्थन ही पर्याप्त नहीं, एक स्वतंत्र प्रशासनिक ईकाई स्थापित करना ही मकसद नहीं, बल्कि भाषा और संस्कृति अहम कारक होते हैं। आंध्रप्रदेश को भाषायी आधार पर अलग राज्य बनाने के बाद ही समस्याओं का समाधान नहीं हुआ। राज्य पुनर्गठन आयोग ने इसी मुद्दे का व्यापक अध्ययन किया और 1955 में निष्कर्ष दिया कि अलग राज्य बनाने के लिए भाषायी ही सबसे सशक्त आधार है। राज्य सिर्फ एक प्रशासनिक ईकाई, एक अलग, स्वतंत्र सरकार ही नहीं है, वहां लोकतांत्रिक संस्थानों की प्रक्रिया और कार्यप्रणाली भी भावनात्मक हो। भाषा इस संदर्भ में इसका माकूल जवाब हो सकती है।

मायावती का 'अलग राज्य'

बसपा प्रमुख मायावती ने चुनाव प्रचार के दौरान पश्चिमी उप्र को एक अलग, स्वायत्त राज्य बनाने का मुद्दा उछाला है। जब मायावती 2007-12 के दौरान उप्र की मुख्यमंत्री थीं, तब भी वह इस मुद्दे पर मुखर थीं। देश के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और उनके बाद भी इसी भूक्षेत्र को 'हरित प्रदेश' नामक राज्य बनाने को आंदोलन और अभियान छेड़े गए थे। 'हरित प्रदेश' राष्ट्रीय लोकदल के महत्वपूर्ण मुद्दों में एक था। चूंकि पश्चिमी उप्र जाट, किसान, गुर्जर बहुल आबादी का क्षेत्र है, जिनका बुनियादी पेशा कृषि है, लिहाजा 'हरित प्रदेश' नाम देने की बार-बार बात कही गई, लेकिन अब मायावती ने जो मुद्दा उठाया है, उसकी भावुकता 'हरित प्रदेश' से न जुड़ कर राजनीतिक और चुनावी अधिक है। बसपा को आम चुनाव, 2024 में कोई बड़ा फायदा मिलेगा, ऐसे आसार नहीं हैं, क्योंकि मायावती राजनीतिक तौर पर उतनी सक्रिय भी नहीं हैं। किसी भूखंड, क्षेत्र का पुनर्गठन कर नया, अलग राज्य बनाना आसान नहीं है। अलग राज्य के लिए संस्कृति, भाषा और जन-आंदोलन का होना बेहद अनिवार्य है। भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का सिलसिला 1953 में शुरू हुआ, जब आंध्रप्रदेश को प्रथम भाषायी राज्य बनाने की प्रक्रिया आरंभ की गई। तत्कालीन मैसूर राज्य और मद्रास राज्य के हिस्सों को अलग कर 'आंध्रप्रदेश' नए राज्य का पुनर्गठन किया गया। 2013-14 में आंध्रप्रदेश का विभाजन किया गया और 'तेलंगाना' नया, अलग राज्य बनाया गया। राज्य पुनर्गठन आयोग भारत सरकार का एक संस्थान है, जो नया, अलग राज्य बनाने की प्रक्रिया सम्पन्न करता है। आयोग राज्यों के विभिन्न विवादों का भी निपटान करता है।

अलग राज्य बनाने के पीछे राजनीतिक समर्थन ही पर्याप्त नहीं, एक स्वतंत्र प्रशासनिक ईकाई स्थापित करना ही मकसद नहीं, बल्कि भाषा और संस्कृति अहम कारक होते हैं। आंध्रप्रदेश को भाषायी आधार पर अलग राज्य बनाने के बाद ही समस्याओं का समाधान नहीं हुआ। राज्य पुनर्गठन आयोग ने इसी मुद्दे का व्यापक अध्ययन किया और 1955 में निष्कर्ष दिया कि अलग राज्य बनाने के लिए भाषायी ही सबसे सशक्त आधार है। राज्य सिर्फएक प्रशासनिक ईकाई, एक अलग, स्वतंत्र सरकार ही नहीं है, वहां लोकतांत्रिक संस्थानों की प्रक्रिया और कार्यप्रणाली भी भावनात्मक हो। भाषा इस संदर्भ में इसका माकूल जवाब हो सकती है। प्रशासन के प्रभावों का भी सवाल है। कभी प्रभावशीलता प्रशासनिक ईकाई के आकार से भी तय होती है। करीब अढाई दशक पहले 'हरित प्रदेश' रालोद का सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा था। आज नहीं है। इसी दौर में भाषायी आधार और क्षेत्रीय इतिहास, संस्कृति के आधार पर अलग राज्यों की मांगें मुखर होने लगीं। नतीजतन झारखंड, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ राज्य बनाए गए। उनके मूल राज्य-बिहार, उप्र और मध्यप्रदेश इतने विशाल राज्य थे कि विभाजन होने के बावजूद कुछ और अलग राज्यों की मांगें गूंजती रहती हैं। आवास और शहरी मामलों की संसदीय कमेटी की एक रपट में अनुमान लगाया गया था कि राष्ट्रीय जीडीपी में शहरी भारत की हिस्सेदारी 65 फीसदी है, लिहाजा शहरी प्रभुत्व राज्य में राजनीतिक आयामों और गतिशीलता को बदल सकता है। राज्य सरकार को जो टैक्स मिलता है, उस पर भी स्वायत्त नियंत्रण इसी वर्चस्व से तय होगा। पश्चिमी उप्र का मुद्दा अपेक्षाकृत आर्थिक रूप से कमजोर क्षेत्र का होगा।

तेलंगाना भी खेती वाला क्षेत्र था, जिसके अपने आर्थिक मतभेद थे। आंध्रप्रदेश से आज भी ऐसे कई मतभेद सुलझ नहीं पाए हैं, लेकिन हैदराबाद पर तेलंगाना का नियंत्रण है, यह काफी महत्वपूर्ण है।

विस्तार पाते 'संकल्प'

भाजपा के 'संकल्प-पत्र' में कुछ भी नयापन नहीं है। योजनाओं का या तो विस्तार किया गया है अथवा राष्ट्रीयकरण की घोषणा की गई है। भाजपा पूरी तरह प्रधानमंत्री मोदी के रिकॉर्ड और लोकप्रियता के भरोसे है। प्रत्यक्ष रेवड़ियों अथवा मुफ्तखोरी का कोई भी संकल्प नहीं किया गया है। देश के 80 करोड़ से अधिक गरीबों के लिए 5 किलो 'मुफ्त अनाज' की योजना 2029 तक जारी रहेगी। यह देश आकलन करेगा कि वह इसे 'मुफ्तखोरी' की जमात में रखता है अथवा इसे सामाजिक-राष्ट्रीय कल्याण की जरूरत मानता है! हालांकि कोरोना-काल के काले-आर्थिक प्रभाव अब समाप्त हो चुके हैं। बहरहाल भाजपा का चुनावी घोषणा-पत्र एक राजनीतिक दस्तावेज होने के बजाय प्रशासनिक कार्यक्रम का रोड मैप अधिक लगता है, ताकि देश स्थिर और सशक्त बना रहे। चूंकि प्रधानमंत्री मोदी अपने तीसरे कार्यकाल को लेकर काफी आश्वस्त हैं, लिहाजा मौजूदा योजनाओं के विस्तार घोषित किए गए हैं। मसलन-70 साल से अधिक उम्र वाले बुजुर्गों को 'आयुष्मान भारत' के दायरे में रखा जाएगा। ऐसे बुजुर्ग गरीब हों या मध्यवर्गीय हों अथवा सम्पन्न हों, सभी को 5 लाख रुपए तक 'मुफ्त इलाज' की सुविधा दी जाएगी। सरकार ने 60-70 साल के सभी बुजुर्गों को इस योजना में क्यों नहीं रखा, इसका स्पष्टीकरण सरकार ही दे सकती है। इस आयु-वर्ग को भी कंपनियां 'स्वास्थ्य बीमा' नहीं देती हैं अथवा बीमे की किस्त बहुत महंगी होती है।

यदि सभी वरिष्ठ नागरिकों को 'आयुष्मान' के दायरे में रखा जाता, तो भाजपा एक और लाभार्थी वर्ग तैयार कर सकती थी। भाजपा ने 'समान नागरिक संहिता', 'एक राष्ट्र, एक चुनाव', 'नागरिकता संशोधन अधिनियम', '3 करोड़ लखपति दीदी' आदि योजनाओं को लागू करने या विस्तार देने की घोषणा की है। भाजपा के वैचारिक कार्यक्रमों में अयोध्या में राम मंदिर निर्माण, जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को निरस्त करना और समान नागरिक संहिता शामिल रहे हैं। अब सिर्फ नागरिक संहिता को ही देश भर में लागू करना शेष है। यह मोदी सरकार के नए कार्यकाल के दौरान सम्पन्न किया जा सकता है। शुक्र है कि 'संकल्प-पत्र' में एनआरसी का कोई जिक्र नहीं है। भाजपा की वैचारिकता में 'तीन तलाक का कानून' और नागरिकता संशोधन अधिनियम के तहत विदेशों में पीड़ित हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई और पारसी समुदायों को भारत की नागरिकता देना प्रधानमंत्री मोदी ने शामिल किया था। इससे औसतन 18-20 फीसदी मुस्लिम वोट भी भाजपा के पक्ष में आने लगे हैं। 'संकल्प-पत्र' में गरीबों के लिए 3 करोड़ और पक्के घर बनाना, जबकि 4 करोड़ बनाए जा चुके हैं, मुद्रा लोन की सीमा 10 लाख रुपए से बढ़ा कर 20 लाख रुपए करना, गांवों में 3 करोड़ लखपति दीदी और बनाना, 6000 रुपए की पीएम किसान सम्मान निधि आदि पुरानी योजनाएं ही हैं, जिनमें विस्तार किया गया है अथवा यथावत जारी रखा गया है।

सॉफ्ट हिंदुत्व की ओर बढ़ती कांग्रेस

डा. देवेंद्र गुप्ता

कांग्रेस को सबसे बड़ी और पुरानी राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा हासिल था। सबसे बड़ी होने का रुतबा अब भारतीय जनता पार्टी ने कब का कांग्रेस से छीन लिया है। उसको अब पुरानी पार्टी ही बन कर संतोष करना पड़ रहा है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो कांग्रेस ने धर्मनिरपेक्षता के मुद्दे पर बड़ी गहनता के साथ देश पर शासन करते हुए राजनीतिक दुर्घटना को अंजाम दिया। बहुसंख्यक हिंदुओं को सहिष्णुता का तो हमेशा पाठ पढ़ाया गया, परंतु अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को अधिमान दिया गया। हिंदू मतदाताओं ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, फिर भारतीय जनसंघ, जनता पार्टी और अंततोगत्वा भारतीय जनता पार्टी में शरण ली और इस तरह भाजपा का अभ्युदय हिंदू धर्म की अस्मिता को लेकर और अल्पसंख्यक तुष्टिकरण व आतंकवाद के विरोध में हुआ। अटल-आडवानी की युति ने भारतीय जनता पार्टी के रथ को हांकते हुए कई राज्यों में और केंद्र में सरकार बनाने में सफलता प्राप्त की। कांग्रेस भी इसी बीच इन राजनीतिक झंझावातों को झेलते हुए भाजपा के बढ़ते कदमों को रोकने में सफल होती नजर आई और सरदार मनमोहन सिंह के नेतृत्व में दो बार केंद्र में सरकार बनाने में सफल हुई। 2014 के चुनावों में बड़े स्तर पर हुए घपले, भ्रष्टाचार तथा राम मंदिर निर्माण का मुद्दा इतना हावी रहा कि कांग्रेस को केंद्र में और राज्यों में जबरदस्त हार का मुंह देखना पड़ा और भाजपा केंद्र में सत्ता हथिया पाने में सफल रही। अब जबकि 2024 के लोकसभा चुनावों की बिसात बिछ चुकी है तो कांग्रेस के कर्णधारों को भाजपा की राजनीति से यह बात साफ समझ में आ गई है कि भारत जैसे हिंदू बहुल वोटरों के देश में अब उनकी जनभावनाओं को नहीं दबाया जा सकता है। इसीलिए कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व हिंदू हितैषी दिखने/दिखाने के लिए देश के मंदिरों की शरण में जाने लगे हैं और अपने को जनेऊधारी बताने लगे हैं। यहां तक कि राहुल की दोनों पद्यात्राओं में मंदिरों में आस्था, मठाधीशों और शंकराचार्यों से आशीर्वाद प्राप्त करना प्रमुखता

के साथ एजेंडा में रहे। हिमाचल में भी कांग्रेस का शीर्ष राजनीतिक वीरभद्र परिवार अपने को सनातनी और 'हिंदू होने पर गर्व है' कहलाने में नहीं हिचकिचाया है। छह बार मुख्यमंत्री रहे वीरभद्र सिंह के बेटे और कांग्रेस सरकार में कैबिनेट मंत्री विक्रमादित्य ने 22 जनवरी को राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शामिल होने का बाकायदा ऐलान कर दिया था। केन्द्रीय नेतृत्व की लाइन के विपरीत प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और सांसद प्रतिभा सिंह ने भी आस्था जताई। सरकार के मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों ने भी यही दोहराया कि वो भी हिंदू हैं, पर वो राम मंदिर दर्शनों को बाद में जाएंगे। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिमाचल की राजनीति के शिखर पुरुष वीरभद्र सिंह एक अच्छे प्रशासक ही नहीं बल्कि सुलझे हुए चुनावी रणनीतिकार भी थे। पिछली सदी के आठवें दशक में देश-प्रदेशों में भारतीय जनता पार्टी की आहट और उपस्थिति दर्ज होने लगी थी। उस समय हिमाचल के मुख्यमंत्री के तौर पर वीरभद्र सिंह प्रदेश की राजनीति में काबिज हो गए थे। वीरभद्र का शासन समय और भाजपा का आरोहण काल एक ही है।

वो धर्म को व्यक्ति की आस्था का विषय मानते थे। धर्म में उनकी गहरी आस्था थी। मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य, विशेषकर धर्म पीठों और काष्ठ कुणी शैली के मंदिरों के रखरखाव में विशेष ध्यान देते थे। उनके राज में मंदिरों को सरकारी अधिनियम के तहत अधिगृहित करते हुए प्राप्त आय को जनकल्याण में लगाया गया। प्रदेश में 2007 को धर्मांतरण पर अधिनियम लाया गया और बूढ़े, गरीब, असहाय माता-पिता को भरण पोषण का कानून पारित हुआ। ये कल्याणकारी कदम ऐसे थे जिन्होंने प्रदेश के हिंदू बहुल वोटरों को कांग्रेस से जोड़े रखा था। परंतु वीरभद्र आरएसएस की हिंदुत्व वाली विचारधारा को सांप्रदायिकता फैलाने वाली व नफरत पैदा करने वाली मानते थे। समाज में ऐसे विघटनकारी संस्थान को एक समय में बैन भी किया था। इसके बावजूद वीरभद्र ने चार-पांच दशक पहले अपने प्रदेश में समझ लिया था कि बहुसंख्यकों की अनदेखी भारत जैसे देश के लिए और राजनीतिक तौर पर कांग्रेस के लिए अहितकारी होगी। हिमाचल में हिंदू बहुल आबादी होने के नाते हिंदू वोटरों ने सदैव उनका साथ दिया। जब राम मंदिर के निर्माण की बात आई तो अयोध्या को वह प्रति वर्ष नियम के साथ दान भेजते रहे। यही कारण है कि राम मंदिर निर्माण सभा ने वीरभद्र परिवार को न्योता भेजा और उनके बेटे, कांग्रेस के युवा आइकॉन विक्रमादित्य ने अपने पिता का मान रखते हुए और स्वयं राम भगवान में आस्था जताते हुए अयोध्या का निमंत्रण स्वीकार किया। कांग्रेस जैसा इतना बड़ा राष्ट्रीय दल भाजपा से मुकाबिल होने के लिए अपने से छोटे क्षेत्रीय दलों के साथ आज गठबंधन करने को मजबूर हुआ जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में हिंदू धर्म को मानने वाले कुल जनसंख्या का 95.17 फीसदी हैं, जिनमें मुसलमान कुल आबादी का 2.18 फीसदी हैं और ईसाई कुल आबादी का 0.18 फीसदी हैं।

प्रदेश के 12 में से 11 जिलों में हिंदू बहुसंख्यक आबादी है। स्पष्ट है कि मुसलमान और ईसाई आबादी की संख्या इतनी भी नहीं है कि वे चुनावों के परिणामों को प्रभावित कर सकें। इनमें भी 56 प्रतिशत उच्च जाति के हैं जिनमें राजपूत 28 और ब्राह्मण 20 फीसदी हैं। वैश्य-क्षत्रिय 8 फीसदी बैठते हैं। शेष निचली जाति के हिंदू आते हैं जिनको सभी पार्टियां लुभाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ती हैं। हिमाचल के राजनीतिक परिदृश्य और कांग्रेस के नेताओं के बयानों को देख कर अब यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि कांग्रेस अब हिंदुत्व के मुद्दे पर नरमी दिखाती अग्रसर हो रही है, पर इस ऐहतियात के साथ कि कहीं दूसरे वर्गों का वोटर उनसे छिटक न जाए।

बच्चे और राजनीति

इन दिनों आम चुनाव में लगभग सभी राजनीतिक दल अपने-अपने घोषणापत्र तैयार कर रहे हैं, लेकिन अपेक्षाओं के विपरीत भारत की 42 प्रतिशत जनसंख्या, यानी युवाओं और बच्चों के मुद्दों पर कोई चर्चा नहीं है। कुछ दलों के घोषणापत्रों में टोटकों की तरह बच्चों के मुद्दे रखे तो गए हैं, लेकिन उन पर कोई सार्वजनिक बहस नहीं की जा रही। देश का संविधान कहता है कि लोकतंत्र सबका है और राज्य को सभी के लिए समान विचार अपनाना चाहिए, लेकिन हमारे राजनीतिक दलों और राजनेताओं ने इसे ऐसे समझा है कि जो मतदान करेगा या मतदान को प्रभावित करेगा, उसके बारे में उसी अनुपात में बात की जाएगी। इसलिए आम चुनाव हो या कोई अन्य चुनाव, बच्चों और युवाओं के मुद्दे गौण हो जाते हैं। होना तो यह चाहिए कि जो वर्ग अपना मत नहीं दे सकता वह सरकारों की प्राथमिकता में हो। जब यही राजनेता और राजनीतिक दल बच्चों को कल का नागरिक बताते नहीं थकते और उनके विकास की दलीलें देते हैं तो यह उनकी जिम्मेदारी बनती है कि वे बच्चों पर, उनके मुद्दों पर बात करें। बच्चे, जितने कल के नागरिक हैं उतने ही आज के भी हैं। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति स्व. नेल्सन मंडेला कहते थे कि किसी भी देश की प्रगति का अंदाजा इस बात से लगता है कि वहां बच्चों की हालत क्या है। हमारे देश में बच्चों की हालत नाजुक है। 30 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं और इंटरनेशनल फूड पालिसी रिसर्च इंस्टीटयूट (इफ्री) की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत में कुपोषित बच्चों की संख्या बहुत अधिक है। अफ्सोस कि कुपोषण को समूल नष्ट करना राजनीतिक दलों की प्राथमिकता में नहीं है, जबकि कुपोषण को खत्म करना उनकी पहली प्राथमिकता में होना चाहिए। हम सभी जानते हैं कि कुपोषण एक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक कुचक्र से शुरू होता है, जिसे पांच साल में खत्म नहीं किया जा सकता, उसके लिए सतत प्रयासों की जरूरत है, लेकिन कम से कम इसे समाप्त करने की इच्छाशक्ति तो जताई ही जा सकती है। हाल ही में भोपाल में युवाओं और बच्चों ने 'सुरक्षित शहर परियोजना' के तहत बनाए गए 'उड़ान यूथ फेडरेशन' के माध्यम से अपनी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को राजनीतिक दलों के सामने रखा। युवाओं ने उनके रोजमर्रा से जुड़े ऐसे प्रश्नों को सामने रखा जो आम तौर पर राजनीतिक दलों की चिंता में शामिल नहीं होते। युवाओं ने कहा कि हम प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, लेकिन जब परीक्षा देकर आते हैं तो पेपर लीक हो जाता है! नर्सिंग की एक छात्रा अलका कुशवाह ने कहा कि पिछले चार सालों से हमारी परीक्षा ही नहीं हुई तो हम कैसे आगे बढें? अधिकांश लोग अवसाद में हैं। साक्षी वर्मा ने कहा कि मध्यप्रदेश में 'सीखो-कमाओ योजना' आई, हमने बहुत उत्साह से उसके लिए आवेदन किया, हमारा चयन भी हो गया, लेकिन लाभ ही नहीं मिला। उन्होंने सवाल उठाया कि फिर ऐसी योजनाओं का क्या औचित्य? तरुण ने कहा कि अभी तक छह से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निजी शिक्षण संस्थानों में नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है, लेकिन जैसे ही ये बच्चे आठवीं कक्षा पढ़ चुके होते हैं, उसके बाद उन्हें शुल्क देना होता है, जिसके चलते वे बड़े पैमाने पर ड्रापआउट हो जाते हैं।

नक्सलवाद: आखिर कब थमेगी अपने ही युवाओं से खून की होली

योगेंद्र योगी

छत्तीसगढ़ के कांकेर में सुरक्षाबलों ने 29 नक्सलियों को ढेर कर दिया। इस ऑपरेशन के लिए सुरक्षाबलों को कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। जवान नक्सलियों के अड्डे तक पहुंचने के लिए 20 घंटे तक पैदल चले हैं। नक्सलियों के समूह को देखने के बाद पुलिस ने फायरिंग शुरू की थी। जब बंदूकें शांत हुईं, तो जंगल के फर्श पर सूखे पत्तों के बीच 29 माओवादी मृत पड़े थे। इनमें ललिता, शंकर और दूसरे कमांडर विनोद गावड़े के शवों की पहचान सबसे पहले की गई। मृतकों में पंद्रह महिलाएं भी थीं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नक्सलियों के खिलाफ मिली सफलता को केन्द्र और राज्य में भाजपा सरकार की उपलब्धि बताया। उन्होंने विश्वास जताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बहुत कम समय में देश से नक्सलवाद को उखाड़ फेंका जाएगा। छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनने के बाद से इस अभियान को गति मिली है। नक्सली इलाकों में सुरक्षा बल कैंप लगाए जा रहे हैं। 19 के बाद इनकी संख्या 250 हो गई है। नक्सलियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में छत्तीसगढ़ पुलिस से भी मदद मिल रही है। राज्य में भाजपा सरकार बनने के बाद तीन महीने में 80 से ज्यादा नक्सली मारे गए हैं। 125 गिरफ्तार हुए हैं और 150 ने आत्मसमर्पण किया है। देश के 10 राज्यों में 70 जिलों में नक्सलवाद का प्रभाव है। इसमें सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य झारखंड जहां 16 जिले हैं। वहीं छत्तीसगढ़ में नक्सल प्रभावित 14 जिले शामिल हैं।

छत्तीसगढ़ में पिछले 14 सालों के भीतर 1582 नक्सली मुठभेड़ हुई है। इन मुठभेड़ के दौरान 1452 नक्सली मारे गए हैं। इस बीच 1002 आम नागरिकों की भी मौत हुई है। वहीं इन हमलों में 1222 जवान शहीद हो चुके हैं। छत्तीसगढ़ में नई सरकार के गठन के बाद नक्सलियों को आशंका थी कि सरकार उनके खिलाफ अभियान तेज करेगी और हुआ भी ऐसा ही। राज्य की नई सरकार ने शान्ति का प्रस्ताव भी सामने रखा था लेकिन नक्सल नेताओं की तरफ से इस प्रस्ताव पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई। वहीं दूसरी तरफ पुलिस और सुरक्षाबलों को बस्तर में फ्री हैण्ड कर दिया गया हैं। ऐसे में पिछले तीन महीनों में नक्सलियों को कई बड़े नुकसान उठाने पड़े हैं। अब तक जहां माओवादियों के बटालियन स्तर के नेता ही ढेर हुए थे तो इस बार शंकर राव जैसे डिवीजन लेवल का नेता पुलिस के गोली का शिकार हुआ हैं। ऐसे में नक्सली प्रदेश में पूरी तरफ से बैकफुट में हैं। अब लगातार सवाल किये जा रहे हैं कि आखिर कब तक छत्तीसगढ़ को इस नक्सल दंश से छुटकारा मिल पायेगा और बस्तर में खून की होली थमेगी। सरकार, सुरक्षा बलों एवं स्थानीय लोगों की संयुक्त कोशिशों का परिणाम है कि पिछले एक दशक में वामपंथी अतिवाद संबंधी घटनाओं, मौतों और उनके भौगोलिक प्रसार में काफी कमी आई है। जहाँ वर्ष 2010 में वामपंथी अतिवाद से प्रभावित ज़िलों की संख्या 96 थी वहीं वर्ष 2018 में प्रभावित ज़िलों की संख्या 60 रह गई है। वर्ष

2009 में जहाँ नक्सलवाद की घटनाओं और इन घटनाओं में मरने वालों की संख्या क्रमश 2258 व 1005 थी वहीं वर्ष 2018 में यह संख्या घटकर क्रमश 833 एवं 240 रह गई। देश के जिन 8 राज्यों के लगभग 60 जिलों में यह समस्या बनी हुई है उनमें ओडिशा के 5, झारखंड के 14, बिहार के 5, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ के 10, मध्य प्रदेश के 8, महाराष्ट्र के 2 तथा बंगाल के 8 जिले शामिल हैं। वर्ष 2015 के बाद से नक्सलियों के 90 प्रतिशत हमले लगभग चार राज्यों- छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार और ओडिशा में हुए हैं।

माओवादियों के थिंक-टैंक और प्रथम पंक्ति के नेता या तो मारे जा चुके हैं या इस विचारधारा को छोड़ चुके हैं। भारत में नक्सली हिंसा की शुरुआत वर्ष 1967 में पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग ज़िले के नक्सलबाड़ी नामक गाँव से हुई और इसीलिये इस उग्रपंथी आंदोलन को 'नक्सलवाद' के नाम से जाना जाता है। ज़मींदारों द्वारा छोटे किसानों के उत्पीडन् पर अंकुश लगाने के लिये सत्ता के खिलाफ चारू मजूमदार, कानू सान्याल और कन्हाई चटर्जी द्वारा शुरू किये गए इस सशस्त्र आंदोलन को नक्सलवाद का नाम दिया गया। यह आंदोलन चीन के कम्युनिस्ट नेता माओ त्से तुंग की नीतियों का अनुगामी था। आंदोलनकारियों का मानना था कि भारतीय मज़दूरों और किसानों की दुर्दशा के लिये सरकारी नीतियाँ ज़िम्मेदार हैं। ये लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक संस्थाओं के खिलाफ हैं और ज़मीनी स्तर पर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को खत्म करने के लिये हिंसा का सहारा लेते हैं। ये समूह देश के अल्प विकसित क्षेत्रों में विकासात्मक कार्यों में बाधा उत्पन्न करते हैं और लोगों को सरकार के प्रति भड़काने की कोशिश करते हैं। केंद्र और राज्य सरकारें माओवादी हिंसा को मुख्यत कानून-व्यवस्था की समस्या मानती रही हैं, लेकिन इसके मूल में गंभीर सामाजिक-आर्थिक कारण भी रहे हैं। नक्सलियों का कहना है कि वे उन आदिवासियों और गरीबों के लिये लड़ रहे हैं, जिनकी सरकार ने दशकों से अनदेखी की है। वे ज़मीन के अधिकार एवं संसाधनों के वितरण के संघर्ष में स्थानीय सरोकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। माओवाद प्रभावित अधिकतर इलाके आदिवासी बहुल हैं और यहाँ जीवनयापन की बुनियादी सुविधाएँ तक उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इन इलाकों की प्राकृतिक संपदा के दोहन में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों ने कोई कमी नहीं छोड़ी है। यहाँ न सड़कें हैं, न पीने के लिये पानी की व्यवस्था, न शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ और न ही रोजगार के अवसर। नक्सलवाद के उभार के आर्थिक कारण भी रहे हैं।

नक्सली सरकार के विकास कार्यों के कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न करते हैं। वे आदिवासी क्षेत्रों का विकास नहीं होने देते और उन्हें सरकार के खिलाफ भड़काते हैं। वे लोगों से वसूली करते हैं एवं समांतर अदालतें लगाते हैं। प्रशासन तक पहुँच न हो पाने के कारण स्थानीय लोग नक्सलियों के अत्याचार का शिकार होते हैं। अशिक्षा और विकास कार्यों की उपेक्षा ने स्थानीय लोगों एवं नक्सलियों के बीच गठबंधन को मज़बूत बनाया है। नक्सलवादियों की सफलता की वज़ह उन्हें स्थानीय स्तर पर मिलने वाला समर्थन रहा है, जिसमें अब धीरे-धीरे कमी आ रही है। सरकार नक्सली चरमपंथ से निबटने के लिये बहुआयामी रणनीति अपना रही है। इसमें सुरक्षा एवं विकास से संबंधित उपाय तथा आदिवासी एवं अन्य कमज़ोर वर्ग के लोगों को उनका अधिकार दिलाने से संबंधित उपाय शामिल हैं। सरकार वामपंथी अतिवाद से प्रभावित क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे, कौशल विकास, शिक्षा, ऊर्जा और डिजिटल संपर्कता का यथासंभव विस्तार करने के भी प्रयास कर रही है।

सरकार की इस नीति के परिणामस्वरूप नक्सलियों के हौसले कमज़ोर हुए हैं तथा उनके आत्मसमर्पण की संख्या लगातार बढ़ रही है। विमुद्रीकरण ने भी नक्सलियों को पहुँचने वाली वित्तीय सहायता पर लगाम लगाई है और इसके बाद से अब तक 700 से अधिक माओवादियों ने आत्मसमर्पण किया है। सरकार वामपंथी अतिवाद से प्रभावित क्षेत्रों में सड़कें बनाने की योजना पर तेज़ी से काम कर रही है और वर्ष 2022 तक 48877 किमी. सड़कें बनाने का लक्ष्य रखा गया है। वामपंथी अतिवाद से प्रभावित क्षेत्रों में संचार सेवाओं को मज़बूत बनाने के लिये सरकार बड़ी संख्या में मोबाइल टावर लगाने का काम कर रही है। इसके तहत कुल 4072 टावर लगाने का लक्ष्य रखा गया है। निश्चित तौर पर पुलिस की दवाब बनाने की सक्रिय कार्रवाई और विकास बहुआयामी योजनाओं से नक्सली समस्या जड़मूल से समाप्त हो सकेगी।

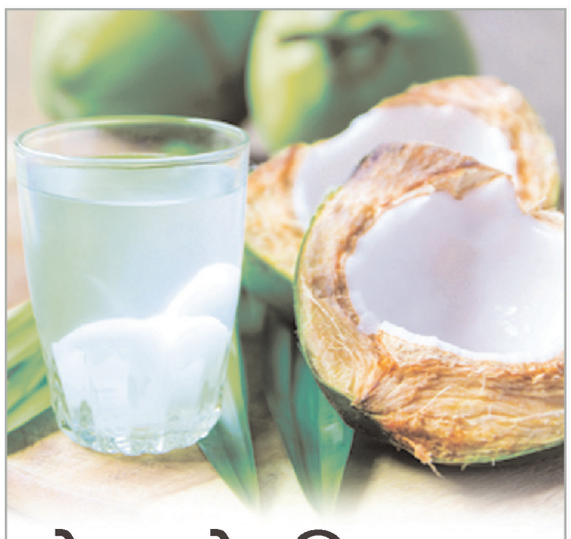

सेहत के लिहाज से काफी फायदेमंद है नारियल पानी

नारियल पानी अधिकतर लोगों को पसंद आता है। लेकिन ये सिर्फ स्वादिष्ट ही नहीं बल्कि सेहत के लिहाज से भी काफी फायदेमंद है। दरअसल, इसमें शरीर के लिए फायदेमंद कई तरह के विटामिन्स, मिनरल्स और इलेक्ट्रोलाइट पाए जाते हैं। जो आपको कई सेहत लाभ देते है। तो आइए जानते हैं नारियल पानी से क्या-क्या फायदे मिलते हैं.

- नारियल पानी का सेवन लिवर के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। नारियल पानी में एंटी-ऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं। जो लिवर में कई तरह के विषाक्त पदार्थों की गतिविधि को कम करते हैं। इसका सेवन करना लिवर के लिए काफी लाभकारी होता है।
- पेट के लिए नारियल पानी बेहद फायदेमंद है। इसके सेवन से पेट दर्द, एसिडिटी, अल्सर में थोड़ा-थोड़ा नारियल पानी पीने से आराम मिलता है।
- ऊर्जावान रहने के लिए नारियल पानी काफी अच्छा होता है। इसके सेवन से कमजोरी, थकान, चक्कर आने जैसी समस्याओं में इसको पीने से तत्काल लाभ प्राप्त होता है।
- नारियल पानी हृदय रोग का जोखिम कम करने का काम करता है। इसके सेवन से खराब कोलेस्ट्रॉल कम होता है।
- वजन कम करना चाहते है, तो नारियल पानी आपकी बहुत मदद करेगा। यह कैलोरी में कम और पचाने में आसान होता है। इसमें कई ऐसे तत्व पाए जाते हैं, जो वजन और मोटापा कम करने में मददगार हैं।
- त्वचा में ग्लो और स्किन बिलकुल क्लिन रखना चाहते है तो नारियल पानी आपको नियमित रूप से पीना चाहिए। यदि चेहरे पर मुहांसे और दाग धब्बों की समस्या बढ़ गई है ,तो नारियल पानी का सेवन आपकी सारी समस्या को दूर करेगा।

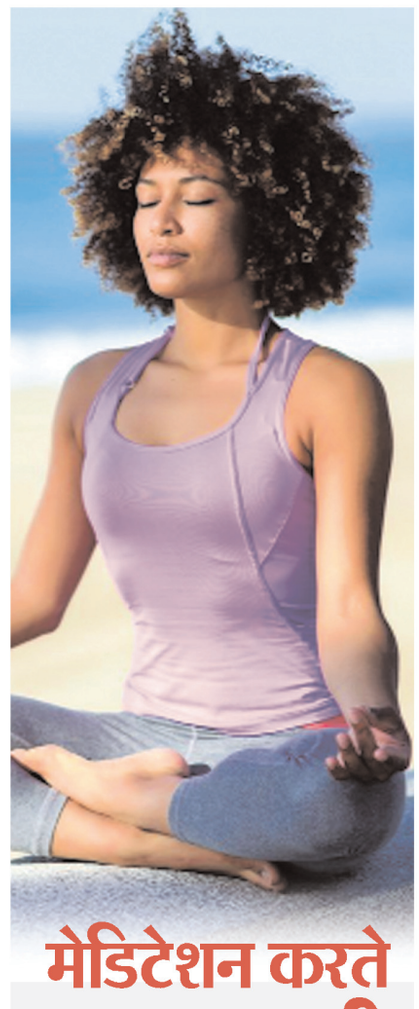

बेल का जूस पीने से सुराही जैसा ठंडा रहेगा पेट

गर्मी में बेल का रस जरूर पीना चाहिए। ये समर ड्रिंक शरीर को चिलचिलाती धूप से बचाने और हाइड्रेट करने का काम करती है। आइए इस फल का शरबत पीने के फायदे जानते हैं।

गर्मी में चिलचिलाती धूप से बचना बहुत जरूरी है। यह शरीर में पानी की कमी, कब्ज, पेट में जलन, सीने में जलन जैसी दिक्कतें कर सकती है। इन समस्याओं को दूर रखने के लिए गर्मी में बेल का जूस पीना चाहिए। यह समर ड्रिंक बेहद हेल्दी होती है। बेल फरूट को बिल्व भी कहा जाता है, जो मूल रूप से भारत में पैदा होता है। यह फल पेट की गर्मी दूर करने का रामबाण इलाज है। आप इसका शरबत पीकर पेट को ठंडक दे सकते हैं। आयुर्वेद एक्सपर्ट डॉ. अबरार मुल्तानी ने बेल शरबत के फायदों के बारे में बताया है। बेल फल काफी पौष्टिक होता है। इसमें प्रोटीन, पानी, फाइबर, कैल्शियम, पोटैशियम, विटामिन बी1, विटामिन बी2, विटामिन सी की अच्छी मात्रा मिल जाती है। इसका गूदा पेट और पाचन के लिए बेहतरीन माना जाता है।

गर्मी की बेस्ट ड्रिंक

डॉ. बेल जूस के बेनिफिट बताते हुए इसे गर्मी के लिए बेस्ट ड्रिंक कहते हैं। इसके रस में ठंडा, ताजगी, पोषण, लैक्सेटिव आदि गुण होते हैं। जो इसे धूप के मौसम के लिए टॉनिक बनाते हैं।

खुल जाएंगी आंतें

पाचन खराब होने पर आंतों का संकुचन कम हो जाता है, जो कि कब्ज बनाता है। गर्मी में डिहाइड्रेशन इस समस्या को गंभीर बना सकती है। मगर बिल्व रस पानी की पूर्ति करके आंतों को रिलैक्स करता है और संकुचन सामान्य करने में मदद करता है।

हड्डियों की मजबूती बढ़ाता है

पेट के अलावा बेल फल का जूस हड्डियों के लिए फायदेमंद है। इसमें कैल्शियम का लेवल शारीरिक ढांचें को मजबूत बनाए रखने में मदद करता है। यह ड्रिंक तुरंत एनर्जी देने के लिए भी जानी जाती है।

बढ़ जाएगा खून

बेल के जूस में विटामिन बी2 होता है, जो शारीरिक विकास में मदद करता है। ये पौष्टिक गुण रेड ब्लड सेल्स के उत्पादन में मददगार होता है। जिससे खून की कमी दूर होती है।

गर्मी में रामबाण है बेल का शर्बत

गर्मी के दुष्प्रभाव और सेहत की हर समस्या के लिए बेल का प्रयोग रामबाण है। यह न केवल शरीर में ठंडक पैदा करेगा बल्कि आपको सेहत से जुड़े ऐसे लाभ देगा, जिसके बारे में जानकर आप हैरान रह जाएंगे। गर्मियों में रामबाण है बेल और उसका शर्बत। जानें 7 फायदे –

- गर्मी के दिनों में लू लगने का डर सबसे ज्यादा होता है। बेल का शर्बत बनाकर पीने से लू का खतरा नहीं होता और लू लग जाने पर यह दवा के रूप में कार्य करता है। तपते शरीर की गर्मी दूर करने में यह बेहद लाभकारी है।
- शरीर में गर्मी अधिक बढ़ जाने पर आंव- दस्त जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इससे छुटकारा पाने के लिए प्रतिदिन आधे कच्चे-पक्के बेलफल का सेवन करें या फिर बेल के शर्बत का सेवन करें। यह डायरिया रोग में काफी लाभप्रद है।
- कई मर्तबा गर्मियों में आंखें लाल-लाल होने के साथ ही जलने लगती हैं। ऐसी स्थिति में बेल के पत्तों का रस एक-एक बूंद आंख में डालने से तुरंत लाभ होता है और इसका कोई नुकसान नहीं होता। इसे बात का ध्यान रखें कि रस में कचरा न हो। आंख के दर्द में बेल के पत्तों की लुगदी आंख पर बांधने से काफी आराम मिलता है।
- पाचन संबंधी समस्याओं में पके हुए बेलफल का सेवन लाभदायक होता है। इसका शर्बत पीने से पेट साफ रहता है। यह फल पाचक होने के साथ-साथ बलवर्द्धक है। इसके सेवन से वात-कफ संबंधी समस्याएं भी समाप्त हो जाती हैं। गर्मियों में गर्भवती स्त्रियों का जी मिचलाने लगे तो बेल और सौंठ का काढ़ा दो चम्मच पिलाने पर लाभ होता है।
- बेल का मुरब्बा शरीर की शक्ति बढ़ाता है और कमजोरी दूर करता है। यह पेट संबंधी समस्याओं में तो फायदेमंद है ही, बेल के गूदे को खांड के साथ खाने से आंत संबंधी रोग में राहत मिलती है।
- बच्चों के पेट में कीड़े होने पर तो इसके पत्तों का अर्क पिलाना कारगर उपाय है। छोटे बच्चों को प्रतिदिन एक चम्मच पका बेल खिलाने से शरीर की हड्डियां मजबूत होती हैं।
- बेल के पके फल को शहद व मिश्री के साथ चाटने से शरीर के खून का रंग साफ होता है और खून में भी वृद्धि होती है। वहीं इसके गूदे में काली मिर्च, सेंधा नमक मिलाकर खाने से आवाज भी सुरीली होती है।

किसी भी रूप में फायदेमंद है मूंग दाल का सेवन

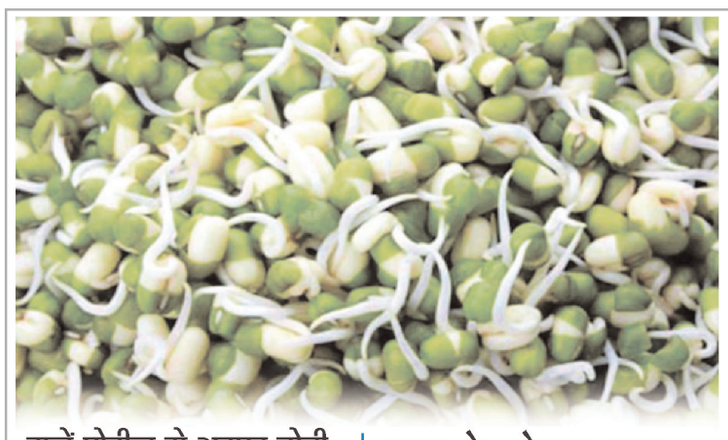

दालें प्रोटीन से भरपूर होती हैं। वैसे तो हर दाल पोषक तत्वों से भरपूर होती है लेकिन फिर भी अगर आपको प्रोटीन की मात्रा से के साथ कुछ परेशानियों को जड़ से खत्म करना है, तो आप अपनी डाइट में मूंग दाल जरूर जोड़ें। किसी भी रूप में मूंग दाल के सेवन के कई फायदे हैं।

दाल के पोषक तत्व

- दालों में सबसे पौष्टिक दाल, मूंग की होती है, इसमें विटामिन ए, बी, सी और ई की भरपूर मात्रा होती है। साथ ही पोटेशियम, आयरन, कैल्शियम की मात्रा भी मूंग में बहुत होती है। इसके सेवन से शरीर में कैलोरी भी बहुत नहीं बढ़ती है। अगर अंकुरित मूंग दाल खाएं तो शरीर में कुल 30 कैलोरी और 1 ग्राम फैट ही पहुंचता है।
- अंकुरित मूंग दाल में मैग्नीशियम, कॉपर, फोलेट, राइबोफ्लेविन, विटामिन, विटामिन सी, फाइबर, पोटेशियम, फास्फोरस, मैग्नीशियम, आयरन, विटामिन बी -6, नियासिन, थायमिन और प्रोटीन होता है।
- मूंग की दाल के स्प्राउट में ग्लूकोज लेवल बहुत कम होता है इस वजह से मधुमेह रोगी इसे खा सकते हैं।
- मूंग की दाल के स्प्राउट में ओलियोसाच्चाराइडस होता है जो पॉलीफिनॉल्स से आता है। ये दोनों की घटक, गंभीर रोगों से लड़ने की क्षमता को प्रबल करते हैं। कैंसर के रोगी भी इसका सेवन आराम से कर सकते हैं।
- मूंग की दाल में ऐसे गुण होते हैं, जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा देते हैं और उसे बीमारियों से लड़ने की ताकत देते हैं। इसमें एंटी-माइक्रोबियल और एंटी-इंफलामेट्री गुण होते हैं, जो शरीर की इम्यूनिटी बढ़ाते हैं।

- मूंग की दाल के स्प्राउट में शरीर के टॉक्सिक को निकालने के गुण होते हैं। इसके सेवन से शरीर में विषाक्त तत्वों में कमी आती है।

ऐसे बनाएं हेल्दी मूंग दाल का चीला

रात को मूंग दाल को एक पैन में पानी डालकर रख दें। इसके बाद सुबह इसे छान कर ग्राइंडर में पीस लें। इसके बाद इसमें नमक डालकर अच्छी तरह से मिला लें। अब तवा को गर्म करें। गर्म हो जाने में थोड़ा सा तेल डालकर मूंग दाल के पेस्ट को डालकर अच्छी तरह से फैला लें। इसके बाद इसमें सभी सब्जियां और पनीर डाल दें। इसके बाद इसमें थोड़ा सा घी डालकर दूसरी तरफ भी सेंक लें। इसके बाद इसे प्लेट में निकाल लें। आपका मूंग दाल का चीला बनकर तैयार हैं। इसे हरी या लाल चटनी के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

मेडिटेशन करते समय आती है नींद? ऐसे पाएं छुटकारा

सेहत के लिए मेडिटेशन के फायदे हम सभी अच्छे से जानते हैं। ऐसे में कई लोग ऐसे हैं जो सालों से इसे कर रहे हैं वहीं कुछ ऐसे हैं जो अपने इस साल के वादे को पूरा करने के लिए हाल ही में मेडिटेशन करना शुरू कर रहे हैं। जो हाल ही में मेडिटेशन की ओर कदम बढ़ा रहे हैं उन लोगों को एक समस्या का सामना करना पड़ रहा है। अक्सर लोगों की शिकायत रहती है कि ध्यान लगाते समय उन्हें नींद आती है। ऐसे में जानते हैं इसकी वजह और कैसे पाएं इससे छुटकारा।

मेडिटेशन आपके दिमाग को बेहतर तरीके से काम करने में मदद करता है। यह आपकी याददाश्त में सुधार करने, तनाव को कम करने में मदद करता है। कई लोगों की शिकायत होती है कि उन्हें मेडिटेशन के दौरान नींद आती है। ऐसा मेडिटेशन के कारण बिल्कुल नहीं होता बल्कि नींद की कमी के कारण ऐसा होता है। नींद की कमी, पोषक तत्वों की कमी और तनाव ऐसे प्रमुख कारण हैं जिनकी वजह से आपको हर समय नींद आती है। ऐसे में आपको एक्टिव रहने के लिए काम करना चाहिए, ऐसे में सबसे ज्यादा जरूरी है सही लाइफस्टाइल और एक अच्छा मेडिटेशन सेशन करना चाहिए, जिससे आप नींद को खत्म कर सकें।

खाने से पहले ध्यान करें

मेडिटेशन में पूरे शरीर को एक बिंदु पर ध्यान केंद्रित करना और खुद के साथ एक आध्यात्मिक संबंध बनान होता है। अगर आप खाने के ठीक बाद ध्यान करना शुरू करते हैं, तो आपको बहुत नींद आएगी क्योंकि आपका शरीर खाना और अन्य जटिल प्रक्रियाओं को पचाने में शामिल होगा और यह आपको विचलित करेगा। खाना खाने से पहले ध्यान करना अधिक फायदेमंद होगा क्योंकि आपका शरीर बिना विचलित हुए इसे पूरा करेगा।

जागरूक और एक्टिव रहें

ध्यान करते समय सचेत और एक्टिव रहना जरूरी है, आपको यह महसूस करना चाहिए कि आपके अंदर कुछ अच्छा हो रहा है। आप इन चीजों पर ध्यान लगाने के लिए सांस की एक्सरसाइज और कुछ शांत म्यूजिक बजा सकते हैं।

अपने ब्रेन को तैयार करें

मेडिटेशन प्रेक्टिस करना एक अच्छा कदम है। लेकिन बहुत लंबे मेडिटेशन सेशन से बचना बेहतर है क्योंकि शुरू में वे आपको नींद में डाल देंगे। आपको अपने दिमाग को इस तरह से प्रशिक्षित करना शुरू करना होगा कि आपका ध्यान अटूट रहे जो केवल 5 मिनट या 10 मिनट के छोटे सत्रों के साथ शुरू करने के बाद ही संभव होगा और फिर धीरे-धीरे लंबे समय तक आगे बढ़ें। जब आप छोटे सत्रों के लिए जागेंगे तो आपका दिमाग अपने आप काम करना शुरू कर देगा और ध्यान करते समय आपको नींद नहीं आएगी।

ओपन एरिया में करें ध्यान

खुले में ध्यान करना हमेशा बेहतर होता है क्योंकि आपका शरीर नेचर के साथ एक्टिव रिलेशन महसूस कर सकता है। इसके अलावा, आपके चारों ओर ठंडी हवा, पक्षियों की हल्की आवाज के साथ आपके मन को शांत करता है और ध्यान करते समय आपको एक्टिव महसूस करने के लिए मदद मिलती है।

संक्षिप्त समाचार

म्यांमार ने पारंपरिक नए साल के दिन 3,000 से अधिक कैदियों को किया माफ

यांगून, एजेंसी । म्यांमार की राज्य प्रशासन परिषद ने पारंपरिक म्यांमार नव वर्ष के पहले दिन बुधवार को 3,000 से अधिक कैदियों को माफी दे दी। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के हवाले से परिषद ने कहा कि उनमें 3,303 म्यांमार के नागरिक और 36 विदेशी कैदी हैं, जिनमें 13 इंडोनेशियाई नागरिक और 15 श्रीलंकाई नागरिक शामिल हैं। इसमें कहा गया है कि माफी म्यांमार के पारंपरिक नए साल के दिन दी गई है, जो लोगों के लिए खुशी का दिन है। एक अलग क्षमा आदेश में परिषद ने दक्षिण पूर्व एशियाई देश की जेलों में बंद कुछ कैदियों की सजा को छठे हिस्से तक कम कर दिया। म्यांमार में पारंपरिक नए साल पर कैदियों को माफ़ करने की प्रथा है। पिछले साल, म्यांमार के पारंपरिक नए साल के दिन 3,000 से अधिक कैदियों को रिहा किया गया था।

राष्ट्रपति मुइज्ज़ू के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों से विवाद

माले, एजेंसी । मालदीव में संसदीय चुनावों से पहले विवाद खड़ा हो गया है। दरअसल, विपक्षी दलों ने राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्ज़ू के खिलाफ 2018 के भ्रष्टाचार की लीक रिपोर्ट के बाद जांच और उन पर महाभियोग चलाने की मांग की है। हालांकि, इन आरोपों को मुइज्ज़ू ने खारिज कर दिया है। मुख्य विपक्षी मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी (एमडीपी) और मुइज्ज़ू की पीपुल्स नेशनल कांग्रेस (पीएनसी) के बीच आरोप-प्रत्यारोप से माहौल बहुत बिगड़ चुका है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक 21 अप्रैल को होने वाले संसदीय (मजलिस) चुनाव में 93 सीटों के लिए कुल 368 उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं। राजनीतिक तूफान एक गुमनाम हैंडल हसन कुरुसी के सोशल मीडिया पर मालदीव मौद्रिक प्राधिकरण और मालदीव पुलिस सेवा की वित्तीय खुफिया इकाई की ओर से तैयार खुफिया रिपोर्ट लीक करने से शुरू हुआ। इसमें मुइज्ज़ू के खाते में पैसे जाने का दावा किया गया है।

कनाडा में सोने की सबसे बड़ी चोरी में सिर्फ एक किलो बरामद, मामले में 6 आरोपित गिरफ्तार

ब्रैंपटन , एजेंसी। एयर कनाडा के कार्गो सुविधा केंद्र से पिछले वर्ष हुई सोने और विदेशी मुद्रा (दोनों 1.6 करोड़ डालर) की चोरी के मामले में कनाडा और अमेरिका की पुलिस ने छह लोगों को गिरफ्तार किया है और तीन अन्य की तलाश जारी है। गिरफ्तार लोगों में से एक को अमेरिका के पेंसिलवेनिया में पकड़ा गया है, वह अमेरिकी पुलिस की हिरासत में है। कनाडा में गिरफ्तार पांच लोगों को फिलहाल जमानत पर छोड़ दिया गया है। इसे कनाडा के इतिहास में सोने की सबसे बड़ी चोरी करार दिया गया था। कनाडा पुलिस के आरोपितों में एयर कनाडा का एक कर्मचारी शामिल है जिसने कार्गो को चुराने के लिए जाली एयरवे बिल बनाया था। साथ ही एयर कनाडा का एक पूर्व मैनेजर भी शामिल है। इस मैनेजर ने चोरी के बाद पुलिस को कार्गो फेसिलिटी का मुआयना करवाया था। यह कार्गो अप्रैल, 2023 में ज्यरिख से टोरोंटो पहुंचा था। इस कार्गो में 419 किलोग्राम वजन की 6,600 सोने की छड़ें शामिल थीं। आरोपितों पर पुलिस ने 19 से ज्यादा आरोप लगाए हैं। उनके पास से एक किलोग्राम सोना और 34 हजार कनाडाई डालर बरामद हुए। पुलिस का कहना है कि चोरी हुए सोने को पिघलाकर कुछ और तैयार कर लिया गया होगा, लिहाजा उसको ट्रैक करना मुश्किल हो गया है। अमेरिका में गिरफ्तार आरोपित से पुलिस ने 65 हथियार बरामद किए हैं और आरोप लगाया है कि इन्हें चोरी की रकम से खरीदा गया था। कनाडा पुलिस के अधिकारी माइक मैविटी ने बताया कि ब्रैंपटन निवासी एयर कनाडा के कर्मचारी 54 वर्षीय परमपाल सिद्धू, टोरोंटो निवासी ज्वैलरी स्टोर के मालिक 37 वर्षीय अली राजा और ब्रैंपटन निवासी 35 वर्षीय प्रसाद परमलिंगम गिरफ्तार लोगों में शामिल हैं। जबकि फेसिलिटी से सोने का कार्गो उठाने वाला ट्रक ड्राइवर ब्रैंपटन निवासी 25 वर्षीय डुरांटे किंग-मैकलीन वर्तमान में हथियार रखने और तस्करी के आरोप में अमेरिकी पुलिस की हिरासत में है। कनाडा पुलिस अभी ब्रैंपटन निवासी व एयर कनाडा के पूर्व मैनेजर 31 वर्षीय सिमरन प्रीत पनेसर, ब्रैंपटन निवासी 36 वर्षीय अर्चित ग्रोवर और मिसिसागा निवासी 42 वर्षीय अर्सलान चौधरी की तलाश कर रही है।

यूक्रेन में रूस ने तेज किए हमले, दागीं तीन मिसाइलें

कीव, एजेंसी । कीव और मॉस्को संघर्ष के बीच बुधवार को रूस ने यूक्रेन के चेर्निहीव में मिसाइल हमला किया। इस हमले में 17 लोगों की मौत हो गई, जबकि 61 घायल हो गए। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने बताया कि मरने वालों की संख्या में वृद्धि होने की आशंका है। इन मौतों के लिए उन्होंने यूक्रेन की हवाई सुरक्षा को जिम्मेदार ठहराया है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने एक बयान जारी करते हुए कहा, अगर यूक्रेन के पास पर्याप्त वायु सुरक्षा उपकरण होता तो ऐसे हमले नहीं होते। आतंकवादी, लोगों को तभी मारते हैं, जब कोई उन्हें रोकने में कामयाब होता है और उसका सामना करने के लिए तैयार रहता है। यूक्रेन के आंतरिक मामलों के मंत्री ईहोर क्लाइमेंको ने कहा कि रूसी गोलाबारी में मारे गए लोगों में एक 25 वर्षीय पुलिस लेफ्टिनेंट भी शामिल हैं। उन्होंने आगे बताया कि पड़ोस के घर में एक महिला बीमार होने के कारण छुट्टी पर थी, इस हमले में वह गंभीर रूप से घायल हो गई। मरने वालों में ज्यादातर युवा चेर्निहीव शहर के प्रमुख ओलेकसैंडर लोमाको ने कहा, मैंने स्वयं सड़क पर क्षतिग्रस्त कारों के भीतर खून से लथपथ लोगों के शवों को देखा। मैंने पीड़ितों की जन्मतिथि देखी, मरने वालों में कई युवा भी शामिल थे। उन्होंने आगे कहा कि बचावकर्मी अभी भी मलबे में पीड़ितों की तलाश कर रहे हैं। लोमाको ने कहा, इस हमले ने यह बता दिया कि यूक्रेन को वायु सुरक्षा उपकरणों की जरूरत है। चेर्निहीव शहर रूस की सीमा पर स्थित है और अक्सर ही यहां के आसमान में मिसाइलों को देखा जाता है। यूक्रेन के आंतरिक मामलों के मंत्री ईहोर क्लाइमेंको ने कहा, रूसी गोलाबारी में मारे गए लोगों में एक 25 वर्षीय पुलिस लेफ्टिनेंट भी शामिल हैं। उन्होंने आगे कहा, पड़ोस के घर में एक महिला बीमार होने के कारण छुट्टी पर थी, वह गंभीर रूप से घायल हो गई। बता दें कि रूस-यूक्रेन संघर्ष के शुरुआती दौर में रूस ने चेर्निहीव को घेर लिया था। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, रूसियों को यहां से खदेड़े जाने और यूक्रेन की वायु सुरक्षा में सुधार के बाद से लोग इस क्षेत्र में वापस लौट आए थे। चेर्निहीव राजधानी कीव से करीब 150 किलोमीटर दूर रूस और बेलारूस की सीमा के पास स्थित है। इस क्षेत्र की आबादी लगभग 2,50,000 है। बुधवार को रूस ने इस क्षेत्र में तीन मिसाइलें दागीं। सैन्य साजो सामान न मिलने से यूक्रेन अब कमजोर पड़ रहा है। उत्तरी यूक्रेन के चेरनीहीव शहर में हुए इस हमले में 20 अन्य लोग घायल हो गये हैं। इससे पहले मेयर ओलेक्जेंडर लोमाको ने आठ लोगों के मरने और 18 अन्य के घायल होने की जानकारी दी थी। जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेन के लोगों में अपनी लड़ाई के लिए प्रतिबद्धता की कोई कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि हमें अपने सहयोगियों से पर्याप्त प्रतिबद्धता और उस प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करने वाली पर्याप्त सहायता की जरूरत है।

पाकिस्तान में भारतीय महिला ने अपने बच्चों के बिना देश छोड़ने से किया इनकार

इस्लामाबाद, एजेंसी । भारतीय नागरिक फरजाना बेगम इस समय पाकिस्तान में अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए लड़ रही हैं। फरजाना ने यह कहते हुए अपने मूल देश (भारत) लौटने से इनकार कर दिया है कि पाकिस्तान में उनके बच्चों की जान को खतरा है। मुंबई निवासी फरजाना बेगम ने साल 2015 में अबू धाबी में पाकिस्तानी नागरिक मिर्जा मुबीन इलाही से शादी की थी। बाद में, दंपति 2018 में पाकिस्तान आए। उनके सात और छह साल के दो बेटे हैं। फरजाना बेगम का मामला तब सुर्खियों में आया जब उसने कथित तौर पर अपने बेटों की कस्टडी और अपने बेटों के नाम पर कुछ संपत्तियों के विवाद को लेकर अपने पति को प्रताड़ित किया।

फरजाना ने अपने पति के इस दावे को खारिज कर दिया कि उसने उसे तलाक दे दिया है। फरजाना ने कहा कि अगर उसने मुझे तलाक दिया है, तो इसका प्रमाण पत्र होना चाहिए। फरजाना ने कहा, पाकिस्तान में संपत्ति विवाद को लेकर मेरी और मेरे बच्चों की जान खतरे में है। मैं लाहौर के रहमान गार्डन में अपने घर तक ही सीमित हूं और मेरे बच्चे भूख से परेशान हैं। फरजाना ने अपने बेटों के बिना अपने मूल देश जाने से इनकार करते हुए पाकिस्तान सरकार से मामला सुलझने तक सुरक्षा मुहैया कराने की मांग की है।

उन्होंने कहा, लाहौर में कुछ संपत्तियां हैं जो मेरे बेटों के नाम पर हैं। मेरे और मेरे बच्चों के पासपोर्ट मेरे पति के कब्जे में हैं। फरजाना बेगम, मिर्जा मुबीन इलाही की दूसरी पत्नी हैं।

अमेरिकी लेखक बोले- लोकसभा चुनाव में भाजपा की स्थिति मजबूत, तीसरी बार सत्ता में लौटेगी पार्टी

वाशिंगटन, एजेंसी । दक्षिण एशियाई मामलों के प्रख्यात अमेरिकी विशेषज्ञ और स्तंभ लेखक सदानंद धूमे ने कहा कि भारत में यकीनन यह मोदी युग है। उन्होंने कहा, देश के लोकसभा चुनाव में सत्तारूढ़ भाजपा की स्थिति स्पष्ट तौर पर मजबूत है। 'वॉल स्ट्रीट जर्नल' के स्तंभकार तथा थिंक टैंक 'अमेरिकन इंटरप्राइज इंस्टीट्यूट' से जुड़े सदानंद धूमे ने कहा, भाजपा तीसरी बार भी सत्ता में लौटेगी। धूमे ने कहा, जैसे 2015 से अमेरिकी राजनीति में ट्रंप युग रहा है, भले ही वह सत्ता में हों या नहीं हों, उसी तरह भारत में लगभग 2013 से स्पष्ट तौर पर मोदी युग है। उन्होंने कहा, आप चाहें उन्हें पसंद करें या उनसे घृणा करें लेकिन वह राष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में हैं। धूमे ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भारत सरकार ने आर्थिक मोर्चे पर काफी अच्छा काम किया है। लेखक सदानंद धूमे ने कहा, कई मायनों में भारत में विपक्ष लगभग ध्वस्त हो गया है। पहले 2014 में और फिर 2019 में कांग्रेस लगातार दो निराशाजनक प्रदर्शनों के बाद से संभल नहीं पाई है। सदानंद धूमे ने कहा, ऐतिहासिक रूप से भारत लंबे समय से एक ऐसा देश रहा है जिसमें केवल एक शक्तिशाली राष्ट्रीय पार्टी रही है। 60, 70, 80 के दशक में कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व था और अब भाजपा। हालांकि उस हद तक नहीं जितना कभी कांग्रेस का प्रभुत्व था।
संसदीय चुनाव अहम होंगे। जॉर्जटाउन विवि के प्रोफेसर इरफान नूरुद्दीन बोले, भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों में गिरावट के संबंध में आलोचना 'थोड़ी ज्यादा' लगती है, लेकिन 'नेताओं को निशाना बनाने' के मामलों की अधिक पड़ताल की जरूरत है।

फर्जी डिग्री मामले में गिलगित-बाल्टिस्तान के पूर्व मुख्यमंत्री को झटका, खालिद खुर्शीद के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी

गिलगित-बाल्टिस्तान , एजेंसी। फर्जी डिग्री मामले में गिलगित-बाल्टिस्तान के पूर्व मुख्यमंत्री (सीएम) खालिद खुर्शीद खान के लिए गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। एआरवाई न्यूज के अनुसार, वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश हिदायत अली ने गिलगित-बाल्टिस्तान के पूर्व मुख्यमंत्री की बार-बार अनुपस्थिति के कारण उनके लिए जमानती गिरफ्तारी आदेश जारी किया।

एआरवाई न्यूज की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) की गिलगित-बाल्टिस्तान शाखा के अध्यक्ष खालिद खुर्शीद ने एक हलफनामा और एक जाली दस्तावेज जमा करके उच्च शिक्षा आयोग (एचईसी) से समकक्षता प्रमाण पत्र

प्राप्त किया। इसके अलावा, गिलगित-बाल्टिस्तान बार काउंसिल से वकील का लाइसेंस प्राप्त करने के लिए लंदन विश्वविद्यालय से फर्जी कानून की डिग्री का भी दावा किया।

पूर्व सीएम को अयोग्य ठहराने वाली याचिका पर सुनाया गया फैसला : रिपोर्ट में कहा गया है कि गिलगित-बाल्टिस्तान मुख्य न्यायालय की तीन सदस्यीय पीठ ने जुलाई 2023 में जीबी असेंबली के सदस्य शहजाद आगा द्वारा फर्जी डिग्री मामले में खालिद खुर्शीद खान को अयोग्य ठहराने वाली याचिका के संबंध में फैसला सुनाया।

इस मामले में याचिकाकर्ता ने दावा किया था कि खुर्शीद को अनुच्छेद 62 और 63 के अनुसार अयोग्य ठहराया जाना चाहिए क्योंकि उनकी कानून की डिग्री फर्जी थी। एआरवाई न्यूज के मुताबिक, हालांकि खुर्शीद ने लंदन से कानूनी डिग्री के साथ स्नातक होने का दावा किया है, लेकिन इसकी पुष्टि नहीं की जा सकी है।

दुबई में दिखा अद्भुत नजारा, देखते ही देखते हरा हो गया आसमान

दुबई , एजेंसी। पिछले कुछ दिनों से दुबई के मौसम में कई बदलाव देखने को मिल रहे हैं। जहां 75 वर्षों में सबसे भारी बारिश ने शहर को जलमग्न कर दिया जिसके बाद देश जैसे थम सा गया। भारी बारिश के बाद कई उड़ानें रद्द कर दी गईं और स्कूल बंद कर दिए गए। कई ऐसे फोटो और वीडियो सामने आए जिसमें पानी से लबालब भरी सड़कें देखने को मिली।

भारी बारिश और बाढ़ के बीच दुबई का एक और अनोखा नजारा देखने को मिला जहां पूरा आसमान हरे रंग में रंगा हुआ दिखा।

एक सोशल मीडिया एक्स यूजर ने 23 सेकंड का एक वीडियो शेयर किया। इस वीडियो का कैप्शन के साथ साझा किया जिसमें लिखा है, दुबई में आसमान हरा हो गया! आज दुबई में आए तूफान की यह वास्तविक फुटेज है।

पोस्ट को एक दिन पहले शेयर किया गया था।

तब से इसे 1.4 लाख से ज्यादा बार देखा जा चुका है। वीडियो को लगभग 700 लाइक्स मिल चुके हैं। लोगों ने इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए तरह-तरह के कमेंट पोस्ट किए। दुबई में आसमान का इस तरह हरा हो जाना कोई मामूली बात नहीं है। इसके पीछे वैज्ञानिक कारण होते हैं। इसको लेकर, पिछले साल फॉक्स न्यूज द्वारा प्रकाशित एक आर्टिकल के में बताया गया था कि यह तब होता है जब वायुमंडल द्वारा बिखरी हुई रोशनी बादलों में बर्फ की बूंदों को रोशन करती है।

सिडनी के चर्च में हमला करने वाले शख्स को बिशप ने किया माफ

सिडनी, एजेंसी । ऑस्ट्रेलिया में हाल ही में चर्च में चल रहे समारोह के दौरान चाकूबाजी की घटना सामने आई थी। हमले में बिशप भी घायल हो गए थे, जिसके बाद उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया था। गुरुवार को बिशप ने बताया कि वह अब ठीक हो रहे हैं। इसके साथ उन्होंने कहा कि हमलावर उनके बेटे जैसा है, इसलिए वह उसे माफ करना चाहते हैं। दरअसल, बीते सोमवार को बिशप मार्च मारी इमैनुएल पर एक 16 वर्षीय लड़के ने सिर और सीने पर चाकू से हमला किया था, जिसके बाद चर्च में अफरा-तफरी मच गई थी। इस घटना पर बिशप ने कहा कि मैं अभी ठीक हूं और बहुत जल्दी चर्च में वापसी करूंगा।

बता दें कि बिशप इमैनुएल के लगभग 200,000 फॉलोअर्स हैं। उनके फॉलोअर्स में इजाफा कोविड-19 टीकाकरण और लॉकडाउन के साथ-साथ इस्लाम की आलोचना से जुड़ी कई पोस्ट के बाद हुआ था। हमले के बाद उन्होंने एक वीडिया जारी किया। इस वीडियो के जरिए उन्होंने कहा कि चिंता करने की कोई बात नहीं है। जिसने भी ये काम किया, मैंने उसे माफ कर दिया है। मैं उससे कहना चाहता हूं, तुम मेरे बेटे हो और मैं तुमसे प्यार करता हूं। मैं हमेशा तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगा। जिसने भी तुम्हें इस काम के लिए भेजा था, मैं उसे भी माफ करूंगा।

हमले के बाद चर्च के बाहर आक्रोश देखने को मिला, जिसे देखते हुए बिशप ने लोगों से शांत रहने की अपील की। हमले की रात समुदाय के सैकड़ों सदस्य घटनास्थल पर पहुंचे। कुछ लोगों ने पत्थरबाजी भी की, जिसमें पुलिसकर्मी भी घायल हुए और कई पुलिस वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गए। इस पर बिशप ने कहा कि मैं चाहता हूं कि आप लोग शांत रहें।

इजरायल तय करेगा कि ईरान के अचानक हुए हमले का जवाब कैसे देना है: बेंजामिन नेतन्याहू

येरुशलम, एजेंसी। अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस समेत कई पश्चिमी देश इजरायल को सलाह दे रहे हैं कि वह ईरान के हमले के जवाब में आगे कार्रवाई न करे। फिर भी इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू कड़ा फैसला लेने के मूड में हैं। उन्होंने बुधवार को इसके संकेत देते हुए कहा कि उनका देश यह तय करेगा कि ईरान के अचानक हुए हमले का जवाब कैसे देना है। इस तरह उन्होंने एक तरह से अमेरिका समेत पश्चिमी देशों को लेकर सख्त रुख अपनाया है। दरअसल अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन लगातार कह रहे हैं कि इजरायल को अब युद्ध में नहीं उतरना चाहिए। इसके अलावा उनकी ओर से यह भी कहा गया है कि यदि इजरायल ने अटैक किया तो अमेरिका सक्रिय रूप से हिस्सा नहीं लेगा।

इजरायल पर हमले के बाद से ही पश्चिम एशिया क्षेत्र में तनाव की स्थिति है। ब्रिटिश विदेश मंत्री डेविड कैमरून और उनकी जर्मन समकक्ष अन्नालेना बेएरबॉक ने इजरायल का दौरा किया है। इसके अलावा अमेरिका और बेल्जियम ने ईरान पर प्रतिबंध लगाने की धमकी दी है। लेकिन इजरायल इतने भर से राजी नहीं है। ब्रिटिश और जर्मन मंत्री से

बातचीत में नेतन्याहू ने साफ कहा कि अपनी रक्षा करने का अधिकार इजरायल के पास है। इस दौरान ब्रिटेन और जर्मनी के विदेश मंत्रियों ने कई तरह से नेतन्याहू को समझाने की कोशिश की। इसके जवाब में नेतन्याहू ने कहा, आपकी बात सही है, लेकिन इजरायल अपने निर्णय खुद लेगा। हम यह साफ कर देना चाहते हैं।

डेविड कैमरून ने मुलाकात के बाद कहा कि हम पूरा जोर दे रहे हैं कि युद्ध अब आगे न बढ़े। इसके लिए हमने अपने मित्र इजरायल को समझाया भी है। हमने इजरायल से कहा कि यह ऐसा वक्त है, जब हमें दिल के साथ ही दिमाग से भी सोचना होगा। जर्मनी की विदेश मंत्री ने कहा कि यह ऐसा समय है, जब सोचना होगा कि ऐसे हालात पैदा न हों कि जिन्हें संभालना ही मुश्किल हो जाए। बता दें कि एक तरफ इजरायल आक्रामक है और ईरान पर जवाबी कार्रवाई के मूड में दिख रहा है तो वहीं ईरान के भी तेवर सख्त हैं। ईरान का कहना है कि यदि इजरायल ने कोई कार्रवाई की तो हम जवाबी हमले में सेकेंड भर की भी देरी नहीं लगाएंगे।

इस बीच ईरान ने बुधवार को अपना आर्मी डे मनाया। इस दौरान तेहरान में उसने हथियारों की परेड निकालकर शक्ति प्रदर्शन किया। इन हथियारों में ड्रोन, लॉन्ग रेंज बलिस्टिक मिसाइल आदि शामिल थे।

अमेरिका में विरोध के बीच भारत के साथ व्यापार संबंध सुधरे, जेट इंजन सौदा क्रांतिकारी: अमेरिकी रक्षा मंत्री

वॉशिंगटन, एजेंसी । अमेरिका में भारत के साथ व्यापार संबंधों पर लगातार यहां के सांसद आरोप लगा रहे है। कुछ सांसद भारत में गेहूं-चावल पर सब्सिडी का मुद्दा उठा रहे हैं। वहीं, यह भी आरोप लगाया जा रहा है कि भारत से आयातित झींगा जबरन मजदूरी पर निर्भर करता है और अवैध एंटीबायोटिक दवाओं वाला होता है। हालांकि इस बीच, बाइडन प्रशासन के एक शीर्ष व्यापार अधिकारी ने बुधवार को बताया कि भारत ने 12 विभिन्न श्रेणियों में अमेरिकी कृषि उद्योग के लिए अपना बाजार खोला है।

अमेरिकी वित्त समिति द्वारा व्यापार पर बुलाई गई सदन की सुनवाई के दौरान सांसदों के सवालों का जवाब देते हुए अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) कैथरीन टाई ने बाइडन प्रशासन के कदमों का बचाव किया। उन्होंने कहा, हम कड़ी मेहनत करने वाले अमेरिकी परिवारों और समुदायों, विशेष रूप से हमारे ग्रामीण समुदायों के लिए बाजार खोल रहे हैं। हमारे प्रशासन ने पिछले तीन साल में नए कृषि बाजार तक 21 अरब डॉलर से अधिक की पहुंच हासिल की है।

टाई ने आगे कहा, उदाहरण के लिए अमेरिका और भारत द्वारा डब्ल्यूटीओ के सात विवाद समाप्त किए जाने के बाद भारत कई अमेरिकी उत्पादों पर जवाबी शुल्क हटाने पर सहमत हुआ था। इसका मतलब है कि छोले, दाल, बादाम, अखरोट और सेब की बेहतर पहुंच से मिशिगन, ओरेगन, कैलिफोर्निया और वाशिंगटन सहित हमारे देश भर के किसानों को लाभ होगा।

उन्होंने कहा कि इसका मतलब है कि टर्की, बतख, ब्लूबेरी और क्रैनबेरी के लिए अधिक बाजार पहुंच से उत्तरी कैरोलिना, पेंसिल्वेनिया, वर्जीनिया, मैसाचुसेट्स और मिनेसोटा के किसानों को फायदा होगा।

अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने बुधवार को सांसदों को बताया कि भारतीय वायु सेना के लिए संयुक्त रूप से लड़ाकू जेट इंजन बनाने का भारत-अमेरिका समझौता क्रांतिकारी है। उन्होंने भारत-अमेरिका समझौता के बारे में एलान करते हुए कहा कि इस ऐतिहासिक सौदे की घोषणा पिछले जून में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका की ऐतिहासिक आधिकारिक यात्रा के दौरान की गई थी। जनरल इलेक्ट्रिक ने भारतीय वायुसेना के लिए

लड़ाकू जेट इंजन बनाने के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। ऑस्टिन ने सदन विनियोग उपसमिति को बताया कि संयुक्त राज्य अमेरिका के भारत के साथ बहुत अच्छे संबंध हैं। उन्होंने कहा कि हमने हाल ही में भारत को जेट हथियार, भारत में जेट इंजन का उत्पादन करने में सक्षम बनाया है और यह एक तरह से क्रांतिकारी है। इससे भारत की क्षमता बढ़ेगी।

अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने कहा कि हम भारत के साथ एक बख्तरबंद वाहन का सह-उत्पादन भी कर रहे हैं। इसलिए, पूरे समझौते को समग्रता में देखने पर हमें पता चलता है कि इस समझौते के कारण भारत और अमेरिका का रिश्ता कहीं अधिक और अच्छा होगा।

संक्षिप्त-खबर

विद्युत विभाग के अधिकारीयों के संरक्षण में बिजली की खुले आम चोरी

सरायपाली (समय दर्शन)। बिजली चोरी का खेल इन दिनों जोरो पर है बेखौफ होकर कई अवैध कनेक्शन खुलेआम खीचते नजर आ रहे है आपको बता दे सरायपाली ब्लॉक के कोसमपाली फीडर के अन्तर्गत आने वाले ग्राम पंचायत बहेरापाली के आश्रित ग्राम छिर्रापाली में खुले आम अवैध कनेक्शन लेकर बिजली चोरी बिजली बिल पर बढ़ा धांधली चल रहा है प्राय: प्राय: देखा जाए तो सभी घरों के इस तरह से अवैध कनेशन ट्यूवेल का कनेक्शन खंभे के मध्यम से खुले तार से लिया जा रहा है जनहित में देखते हुए यह अंदेशा लगाया जा सकता है की शॉर्ट सर्किट जैसे घटना होकर कभी भी बड़ी दुर्घटना को आमंत्रण दे सकता है। इस प्रकार से विधुत का चोरी करना शासन-प्रशासन की बहुत बड़ी विफलता है वही विभाग के आलाधिकारी अनजान बने हुए है इसकी जानकारी विभागीय तौर पर लिया गया तो इस सम्बंध में त्रश्च गुलशन कुमार से दूरभाष के माध्यम से पूछा गया तो उनका कहना है की इस संबध में मुझे कोई जानकारी नही है इसका जांच कर अवैध पाया जाता है उचित कार्यवाही किया जाएगा।

खैरी 64 बल्क लीटर व गणेशपुर 135 में बल्क लीटर कुल कीमती 19900 जप्त

बलौदाबाजार(समय दर्शन)। आबकारी आयुक्त सह सचिव आर संगीता के निर्देश के प्रथम में कलेक्टर के एल चौहान एवं जिला आबकारी अधिकारी गायकवाड़ के मार्गदर्शन में चुनाव को देखते हुए जिले के संदिग्ध इलाकों में लगातार कार्यवाही की जा रही है जिसमें पलारी आबकारी वृत्त के ग्राम खैरी में अज्ञात आरोपी से कुल 64 बल्क लीटर कीमती 6400 जप्त आबकारी अधिनियम 34(1) (क) (च),34(2),59(क) प्रकरण कायम करते हुए आरोपी की तलाश की जा रही है तो वही जिले के संयुक्त टीम ने कार्रवाई करते हुए गणेशपुर के दो आरोपियों से 134 बल्क लीटर कीमती 13400 जप्त करते हुए आरोपी नापिन राय, व महिला आरोपी सुलेखा राय के विरुद्ध आबकारी अधिनियम 34 (2),59(क) के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया एवं उक्त आरोपियों को गिरफ्तार न्यायालय के समक्ष पेश कर जेल भेज दिया। उसके दोनों कार्यवाही में आबकारी उपनिरीक्षक जलेस सिंह, मनराखन नेताम, मोतिन बंजारे, देवनंदन, दिनेश साहू आबकारी मुख्य आरक्षक देवी तिवारी, राधा गिरी गोस्वामी, नगर सैनिक दुर्गा ध्रुव, दुर्गेशवरि कुर्रे एवं लिमतरा चौकी से दुर्गाप्रसाद सोनकर, राजेन्द्र नेताम और ड्राइवर अन्नू, विजय, का विशेष योगदान रहा।

हम सौभाग्यशालियों को मिला राम मंदिर निर्माण के संकल्प से सिद्धि के साक्षी बनने का अवसर - भावना बोहरा

कवर्धा (समय दर्शन)। रामनवमी के अवसर पर 17 अप्रैल को पंडरिया विधानसभा में भी जय श्रीराम के जयकारे के साथ भक्तिमय बना रहा। यहां भव्य शोभा यात्रा एवं भजन संध्या के आयोजन में हजारों की संख्या में रामभक्त शामिल हुए और जय श्रीराम के जयकारे के साथ मर्यादा पुरषोत्तम श्रीराम का जन्मोत्सव बहुत ही धूम-धाम से मनाया गया।

पंडरिया की जनता के विशेष सहयोग एवं विधायक भावना बोहरा के नेतृत्व में भगवान श्री राम की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई, जिसमें क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों से रामभक्त शामिल हुए। इसके साथ ही राजमहल चौक में अंचल शर्मा ग्रुप द्वारा भजन संध्या का आयोजन किया गया, जहाँ रामभक्त संगीतमय संध्या में राम जी के भजन पर हर्षोल्लास के साथ नाचते-गाते

दिखाई दिए।

इस दौरान पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने पंडरिया विधानसभा के ग्राम कुम्ही, धोबघट्टी, चारभाठा खुर्द, परसवारा एवं पलानसरी में जनसंपर्क किया और केंद्र की मोदी सरकार एवं प्रदेश भाजपा सरकार की उपलब्धियों को जानकारी देते हुए 26 अप्रैल को भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपील की।

इस अवसर पर पूर्व सांसद अभिषेक सिंह ने कहा कि 500 वर्षों की प्रतीक्षा का प्रतिफल अयोध्या में श्रीराम के नव्य-भव्य-दिव्य मंदिर के रूप में हमें मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्प और हजारों कार सेवकों के बलिदान से आज हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि रामलला आज भव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं। मैं उन सभी को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ। आज श्रीराम के प्रति रामभक्तों का उत्साह और भी बढ़ गया है हमारे आराध्य प्रभु श्रीराम जी की महिमा को पूरा विश्व देख रहा है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि ऐसे ही प्रभु श्रीराम की महिमा को आगे बढ़ाने और हमारे धार्मिक स्थलों, सभ्यताओं और सभ्यताओं के संरक्षण के लिए लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का संकल्प लेते हुए भारतीय जनता पार्टी को प्रचंड मतों से जीत दिलाने के लिए प्रतिबद्ध हों।

पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने सभी रामभक्तों और पंडरिया विधानसभा के सभी परिवारजनों को रामनवमी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि अयोध्या में निर्मित भव्य राम मंदिर में श्रीराम के विराजमान होने के बाद यह पहली रामनवमी है। अयोध्या में भगवान श्री राम के सूर्य तिलक का अलौकिक अवसर के साक्षी बनने का अवसर हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है। 500 वर्षों की प्रतीक्षा आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संकल्प से फलीभूत हुई है। सूर्यकुल भूषण श्री रामलला के ललाट पर सुशोभित भव्य 'सूर्य तिलक' आज अखिल राष्ट्र को अपने सनातन गौरव से आलोकित कर रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जो भगवान राम के अस्तित्व पर ऊँगली उठाते थे उनके लिए भी यह दिव्य अवसर कभी न भूलने वाला होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्थक प्रयासों और हजारों कार सेवकों के बलिदान से हमें यह शुभ अवसर देखने को मिला है। आज इस शुभ अवसर पर पंडरिया में भगवान श्रीराम की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। इस दौरान हजारों की संख्या में आए रामभक्तों और श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बन रहा था। अपने आराध्य श्रीराम जी के प्रति जन-जन की यह आस्था देखकर अत्यंत ही हर्ष हो रहा है।

मोदी को चुनने का रीजन है, क्योंकि मोदी के पास विजन

श्रीमती बोहरा ने कहा कि आज भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन में देशहित के लिए कार्य कर रही है। विगत 10 वर्षों में जो ऐतिहासिक निर्णय लिए गए हैं उससे भारत को विश्व में एक नई पहचान मिली है। धार्मिक व सांस्कृतिक सभ्यताओं का संरक्षण, अंतरिक्ष में नए आयाम, रक्षा एवं सुरक्षाबलों के लिए अत्याधुनिक उपकरण, महिलाओं के सशक्तिकरण, युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना, किसानों का सम्मान और भारत की अर्थव्यवस्था में सुधार मोदी सरकार की कुशल नीतियों ने देश की दशा और दिशा दोनों को बदलने का काम किया है।

नाबालिक बच्चों से चुनाव प्रचार करवाने वालों कार्यवाही करें आयोग - महिला कांग्रेस

राजनांदगांव (समय दर्शन)। लोकसभा चुनाव में भाजपा लगातार आचार संहिता का उल्लंघन कर रही है उसी क्रम में छुईखदान भाजपा महिला मंडल द्वारा नाबालिक बच्चों से चुनाव प्रचार करवा कर अपनी राजनीतिक स्वार्थ पूर्ति का घिनौना खेल खेली है जिसकी शिकायत कलेक्टर एव जिला निर्वाचन अधिकारी खैरागढ़ छुईखदान गंडई को छ ग प्रदेश महिला कांग्रेस कमेटी की सचिव खैरागढ़ विधानसभा महिला कांग्रेस प्रभारी श्रीमती कुसुम दुबे एवं जिला महिला कांग्रेस अध्यक्षा आरती महोबिया ने की है ।

खैरागढ़ विधानसभा प्रभारी एवं प्रदेश महिला कांग्रेस सचिव कुसुम दुबे ने बताया कि निर्वाचन नियमावली के तहत नाबालिक बच्चों के गले में गमछा, दुपट्टा, हाथों में पंपलेट आदि पकड़ कर चुनाव प्रचार कराने को गैरकानूनी माना गया है उसी तर्ज पर धार्मिक स्थलों का भी चुनाव प्रचार में बिना वैध अनुमति के उपयोग किया जाना निर्वाचन नियमों के विपरीत है छुईखदान भाजपा महिला मंडल की पदाधिकारी राजलक्ष्मी पंसारी, किरण गुप्ता, आशा महोबिया, अनिता, पार्वती महोबिया, तृप्ति वैष्णव, हेमलता देवांगन आदि महिलाओं ने बाई साहब मंदिर छुईखदान में महतारी वंदन योजना के नाम से भाजपा का चुनाव प्रचार करते हुए नाबालिक बच्चों के गले में दुपट्टा एवं हाथ में पंपलेट पांपलेट बंटवाने का कार्य किया है जिसकी फोटो सहित शिकायत करते हुए बाल श्रम कानून एवं किशोर न्याय अधिनियम के अंतर्गत कार्यवाही करने हेतु शिकायत पत्र सौंपा है।

महासमुन्द जिला मे पहली बार बच्चों की नि:शुल्क सर्जरी शिविर अग्रवाल नर्सिंग होम बसना मे सम्पन्न

बसना(समय दर्शन)। महासमुन्द जिले में सेवा भावी हास्पीटल के नाम से जाना जाने वाला अग्रवाल नर्सिंग होम बसना में बीते दिन 18 अप्रैल को नवजात शिशु एवं बच्चों का नि:शुल्क सर्जरी शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में बच्चों से संबंधित ऑपरेशन जैसे सर का बड़ा होना, उंगलियों का जुड़ा होना, तालु व होंठ का फटा होना, जीप की सुतली, शरीर में गठान, अंडकोष में सूजन, अंडकोष एवं जांघ के आसपास में सूजन, हर्निया, अनडेसेंडेंट टेस्टिस, गोटी का ऊपर होना, जन्मजात मलद्वार एवं पेशाब रास्ते के विकार, अपेंडिक्स, पेट में सूजन, ट्यूमर, गले या पीठ में गठान इत्यादि से संबंधित ऑपरेशन प्रदेश के प्रख्यात पीडियाट्रिक सर्जन डॉ.रितेश रंजन द्वारा , वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ एवम संचालक

डॉ.अमितअग्रवाल अग्रवाल नर्सिंग होम का सर्जरी विभाग व निश्चेतना विभाग एवम समस्त स्टाफ के कुशल मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ , जिसमे 13 बच्चों का सफल आपरेशन किया गया ।

तेरह मे से 3 ऐसे मरीज व उनके परिजन थे जिनके पास आयुष्मान कार्ड या बीजू कार्ड आदि कुछ भी आधार नहीं था,उनका भी पूर्णत: नि:शुल्क आपरेशन किया गया है।

इस तरह से अग्रवाल नर्सिंग होम बसना अपनी उदारता व सेवा भावी सोच का परिचय देते हुए, अंचल के जरूरतमंद बीमार लोगों के लिए संजीवनी केन्द्र बनते जा रहा है।

डॉ.अमित अग्रवाल ने बताया कि,अस्पताल प्रबंधन ने बच्चों के आपरेशन शिविर के दौरान मरीजों एवं उनके परिजनों का रूकना, खाना, दवाइयां जांच ऑपरेशन पूरी तरह कैशलेस अर्थात नि:शुल्क था। उन्होंने बताया कि इस तरह के विशाल शिविर का आयोजन निरंतर होते आ रहा है, जिससे सभी तबके के मरीजों को स्वास्थ्य लाभ मिल रहा है।

इस कड़ी को और आगे बढ़ाते हुए आगामी 24 अप्रैल को हड्डी रोग से संबंधित व 27अप्रैल को प्रख्यात लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉ.संदीप दवे एवं पाँच डाक्टरों की टीम द्वारा मेजर आपरेशन शिविर का आयोजन रखा गया है।

इस तरह के विशेष शिविर से अंचल के सभी लोगो को अपने ही घर के नजदीक ,बड़े शहर,मेट्रो सिटी में उपलब्ध सभी प्रकार की जटिल बीमारियों की जांच एवम ऑपरेशन बसना में ही हो जाने से समय के साथ साथ आर्थिक एवम मानसिक परेशानी से लोगो को एवम मरीज के मर्ज में राहत मिलती है।

नारी न्याय गारंटी से महिलाओं में उत्साह

विधायक चातुरी नंद का धुंआधार प्रचार जारी, कई गांवों में पहुंची विधायक

सरायपाली (समय दर्शन)। नारी न्याय गारंटी से गांव गांव की महिलाओं में भारी उत्साह है और महिलाओं ने केंद्र की मोदी सरकार को उखाड़ फेंकने का फैसला ले लिया है। उपरोक्त बातें चुनाव प्रचार के तहत ग्राम पैकिन, छुईपाली, खरखरी, सिंघोड़ा और दीवानपाली में सरायपाली विधायक चातुरी नंद ने कही।

उन्होंने कहा कि केंद्र में कांग्रेस की सरकार बनने पर महिलाओं को सालाना 01 लाख देने की गारंटी हमारी कांग्रेस पार्टी ने दी है। कांग्रेस की इस घोषणा से महिलाओं में खासा उत्साह है। कला

जत्था दल के साथ पहुंची क्षेत्रीय विधायक का ग्रामीणों ने बड़े ही आत्मीयता से स्वागत किया। कार्यक्रम को महिला कांग्रेस की जिलाध्यक्ष दुर्गा सागर ने भी किया।

कार्यक्रम में महिला कांग्रेस की प्रदेश सचिव द्वय भूमिका ध्रुव, दीपांजलि बारीक, आदिवासी कांग्रेस के जिलाध्यक्ष मोहन लाल भोई, छुहीपाली ब्लाक कांग्रेस के अध्यक्ष बलराम भोई, जनपद सदस्य क्षमानिधि साहू, महिला कांग्रेस की ब्लाक अध्यक्ष पूजा तिवारी, रीमा यादव, जयश्री, पूर्णिमा चौहान, माधुरी चौहान, तन्मय पंडा, राकेश साहू, बलराम पटेल, सहित ग्रामवासी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

जन्मदिवस के अवसर पर नेवता भोज का आयोजन

सरायपाली(समय दर्शन)। प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना के तहत शास. प्राथ. एवं उच्च प्राथ. शाला भोथलडीह में शिक्षिका अनुपमा हृदय कुमार साहू के द्वारा अपने जन्म दिवस के अवसर पर नेवता भोज का आयोजन किया गया। नेवता भोज में खीर, पुड़ी और फल सभी छात्र छात्राओं को वितरण किया गया. सभी बच्चों ने नेवता भोज ग्रहण किया. साथ ही न्योता भोज के लिए प्रधान पाठक ने आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया और शुभकामनाएं दी। शास. प्राथ. एवं शास. उच्च प्राथ. शाला के समस्त शिक्षक, संकुल समन्वयक, शाला प्रबंधन समिति के अध्यक्ष, समस्त सदस्य एवं बच्चे उपस्थित थे। साथ ही बताया कि प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना के तहत आप अपने जन्म दिवस, विवाह, विभिन्न अवसरों पर बच्चों के साथ मिलकर मना सकते हैं। इस योजना से समुदाय के बीच अपनेपन की भावना विकसित करने में मदद करेगा साथ ही इसके तहत पोषण तत्व युक्त भोजन से बच्चों के सर्वांगीण विकास में वृद्धि होगा।

नाम-परिवर्तन

मैं, देवनंदन चन्द्राकर उम्र 57 वर्ष आत्मज हृदय लाल चन्द्राकर निवासी - क्वार्टर नम्बर 20/ए, सड़क 32, सेक्टर-4, भिलाईनगर, तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.) पिन-490001, मैं भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई के विभाग मार्स-1 पद मास्टर आपरेटर पर कार्यरत हूँ तथा मेरा परसनल नंबर 153364 है। यह कि मेरे उमरपोटी आवासीय जमीन के रजिस्ट्री पेपर खसरा नं. 302/1 में मेरा नाम श्री डी. एन. चन्द्राकर आत्मज स्व. एच. एल. चन्द्राकर है। मेरे उमरपोटी आवासीय जमीन के रजिस्ट्री पेपर खसरा नं. 349/1 में मेरा नाम देवनंदन चन्द्राकर आत्मज स्व. श्री हृदयलाल चन्द्राकर है। मेरे उमरपोटी अवासीय जमीन के रजिस्ट्री पेपर खसरा नं. 406/1 में मेरा नाम देवनंदन चन्द्राकर आत्मज स्व. हृदयलाल चन्द्राकर दर्ज है। यह कि मेरे इम्पलाइज प्रोफाइल **HRIS** में मेरा नाम **DEVNANDAN CHANDRAKAR S/o LATE H.L. CHANDRAKAR** दर्ज हैं। मेरे हायर सेकेन्डरी स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 1986 के अंक सूची में मेरा नाम **DEVNANDAN CHANDRAKER S/O H.L. CHANDRAKER दर्ज हैं । मेरे ITR FORM NO.-16**, ड्रायविंग लाइसेंस, मतदाता पहचान पत्र, आधार कार्ड, पैन कार्ड में मेरा नाम देवनंदन चन्द्राकर आत्मज हृदय लाल चन्द्राकर **DEVNANDAN CHANDRAKAR S/O HRIDAY LAL CHANDAKAR** दर्ज हैं जो कि मेरा एवं मेरे पिता का सही एवं प्रचलित नाम हैं । भविष्य में पेंशन वास्ते एवं रिटायरमेंन्ट के समय कोई अड़चन न आवे जिसके लिये भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई के समस्त रिकार्ड में एकरूपता समान नाम रखने की आवश्यकता हैं । अब मेरा नया नाम सही स्पेलिंग के अनुसार देवनंदन चन्द्राकर आत्मज हृदय लाल चन्द्राकर **DEVNANDAN CHANDRAKAR S/O HRIDAY LAL CHANDAKAR** कर लिया हैं। अन्य सभी जगह जहाँ-जहाँ मेरा नाम एवं पिता के नाम की सुधार की आवश्यकता होने पर यह नया नाम देवनंदन चन्द्राकर आत्मज हृदय लाल चन्द्राकर दर्ज करवाने हेतु यह शपथपत्र प्रस्तुत हैं।

शपथकर्ता

नाम-परिवर्तन

मैं कंच्ची गायत्री उम्र 22 वर्ष पति कंच्ची जग्गा राव, पता 69-सी, रूआबांधा, भिलाई, तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.) पिन - 490006 मेरे पति कंच्ची जग्गा राव भिलाई इस्पात संयंत्र भिलाई में एस.एम.एस. -विभाग में ओ.सी.टी. के पद पर कार्यरत है। उनका पर्सनल नंबर 405005 है। मेरे पति के बी.एस.पी. सर्विस रिकार्ड, पर्सनल फाईल, ओ.पी.डी. बुक में मेरा नाम पंदिरापल्ली गायत्री **PANDIRAPALLI GAYATRI** दर्ज है । मेरे पेन कार्ड में मेरा नाम पंदिरापल्ली गायत्री **PANDIRAPALLI GAYATRI** दर्ज है। इसमें अपग्रेड आधार कार्ड के अनुसार नाम दर्ज करने की आवश्यकता हैं। मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम पंदिरापल्ली गायत्री **PANDIRAPALLI GAYATRI** दर्ज है। इसे अपग्रेड कर नाम सुधार लिया हैं । मैंने अपना अपग्रेटेड आधार कार्ड में मेरा नाम कंच्ची गायत्री **KANCHI GAYATRI** दर्ज है। जो कि मेरा सही एवं प्रचलित नाम हैं । भविष्य में किसी प्रकार की कठिनाई न आवे इसलिए अपने पति के बी.एस.पी. सर्विस रिकार्ड, पर्सनल फाईल, ओ.पी.डी. बुक एवं अन्य सभी जगह जहाँ-जहाँ आवश्यक हो में मेरा अपग्रेड आधार कार्ड में दर्ज नाम कंच्ची गायत्री **KANCHI GAYATRI** पति कंच्ची जग्गा राव **KANCHI JAGGA RAO** को दर्ज करवाना चाहती हूँ। मैंने आज दिनांक से अपना नाम कंच्ची गायत्री **KANCHI GAYATRI** लिया जिसके समर्थन में यह शपथपत्र प्रस्तुत हैं।

शपथकर्ती

नाम-परिवर्तन

मैं, सुनीता गोविंद दांडेगावकर उम्र 56 वर्ष पति गोविंद त्रिंबकराव दांडेगावकर, निवासी फ्लेट कमॉक 407 कल्पकृति अपार्टमेंन्ट, अवधपुरी रिसाली भिलाई तह व जिला दुर्ग छ.ग. पिन- 490006, मेरे पति भिलाई इस्पात संयंत्र के एस.एम.एस.-2 विभाग में जी.एम. के पद पर कार्यरत हूँ। इनका परसनल नंबर 300259 है। मेरे पति के बी.एस.पी. सर्विस रिकार्ड, परसनल फाइल, मेडिकल बुक, में मेरा नाम सुनीता दर्ज है। मेरे आधार कार्ड, पेन कार्ड एवं ड्रायविंग लाइसेंस में मेरा नाम सुनीता दर्ज हैं। मुझे पासपोर्ट बनवाना हैं, जिसके लिये सुनीता का पूर्ण रूप में नाम उल्लेख करने की सलाह पासपोर्ट आफिस वालों ने दी हैं इसलिये आज दिनॉक से अपना नया नाम सुनीता गोविंद दांडेगावकर पति गोविंद त्रिंबकराव दांडेगावकर **SUNITA GOVIND DANDEGAONKER WIFE OF GOVIND TRIMBAKRAO DANDEGAONKER** रख लिया हैं । अत: अब मुझे इसी नाम से पुकारा एवं पहचाना जाए । क्योंकि विवाह के पश्चात् अपने पति का नाम एवं पति का उपनाम उपयोग किया हैं। गोविन्द मेरे पति का नाम हैं त्रिंबकराव मेरे ससुरजी का नाम हैं एवं दांडेगावकर मेरे ससुराल वालों का उपनाम हैं। जिसको उपयोग करते हुये मेरा नया नाम सुनीता गोविंद दांडेगावकर रख लिया हैं। जो कि मेरे पति के उक्त कागजात में दर्ज हैं तथा मेरी शादी होने के उपरान्त ये मेरा नया नाम हो गया हैं। मेरे पेन कार्ड, आधार कार्ड, बैंक के खाता रिकार्ड एवं जहाँ जहाँ आवश्यक हो में नया नाम दर्ज करवाने हेतु एवं नया पासपोर्ट बनवाने यह शपथपत्र प्रस्तुत हैं ।

शपथकर्ती

नाम-परिवर्तन

मैं गोविंद त्रिंबकराव दांडेगावकर उम्र 58 वर्ष आत्मज त्रिंबकराव दांडेगावकर, निवासी फ्लेट कमॉक 407 कल्पकृति अपार्टमेंन्ट, अवधपुरी रिसाली भिलाई तह व जिला दुर्ग छ.ग. पिन 490006 का निवासी हूँ, मैं भिलाई इस्पात संयंत्र के एस.एम.एस.-2 विभाग में जी.एम. के पद पर कार्यरत हूँ। मेरा पर्सनल नंबर 300259 है। मेरे बी.एस.पी. सर्विस रिकार्ड, पर्सनल फाइल, मेडिकल बुक, पे स्लीप, गेट पास में मेरा का नाम टी. गोविन्द आत्मज त्रिंबकराव दर्ज है। यह कि मेरे आधार कार्ड में नाम टी. गोविन्द आत्मज त्रिंबकराव दांडेगावकर दर्ज हैं। मेरे पेन कार्ड में नाम टी. गोविन्द आत्मज त्रिंबकराव दांडेगावकर, दर्ज हैं। मेरे ITR FORM NO. 16 में मेरा नाम गोविंद त्रिंबकराव दर्ज हैं । बोर्ड ऑफ सेकेन्डरी एजुकेशन, आन्ध्रप्रदेश से प्राप्त अंक-सूची में मेरा नाम टी. गोविन्द आत्मज त्रिंबकराव दर्ज हैं। मेरे ड्रायविंग लाइसेंस में मेरा नाम टी. गोविन्द आत्मज त्रिंबकराव दांडेगावकर दर्ज हैं । मुझे पासपोर्ट बनवाना हैं, जिसमें लिये टी. गोविन्द का पूर्ण रूप में नाम उल्लेख करने की सलाह पासपोर्ट आफिस से दी हैं इसलिये आज दिनांक से अपना नया नाम गोविंद त्रिंबकराव दांडेगावकर आत्मज त्रिंबकराव दांडेगावकर, GOVIND TRIMBAKRAO DANDEGAONKER SON OF TRIMBAKRAO DANDEGAONKER रख लिया हैं। अत: अब मुझे इसी नाम से पुकारा एवं पहचाना जाए। गोविन्द मेरा नाम हैं 'टी' मेरे पिताजी का नाम त्रिंबकराव हैं एवं दांडेगावकर मेरा उपनाम हैं । जिसको उपयोग करते हुये मेरा नया नाम गोविंद त्रिंबकराव दांडेगावकर रख लिया हैं। जो कि मेरे एवं मेरे पिता का उक्त कागजात में दर्ज हैं। भविष्य में मेरे सभी रिकार्ड जैसे - बीएसपी के सर्विस रिकार्ड, पैन कार्ड, आधार कार्ड, बैंक के खाता रिकार्ड में नया नाम दर्ज करवाने, जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ एवं नया पासपोर्ट बनवाने हेतु यह शपथपत्र प्रस्तुत हैं।

शपथकर्ता

नाम-परिवर्तन

मैं हिमांशु कुमार उम्र 52 वर्ष पिता राजेश्वर प्रसाद सिंह, निवासी 339 - टूलिप ए ब्लॉक, तालपुरी, तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.) मेरा पर्सनल नंबर 301418 है । मेरी पुत्री का नाम मेरे सर्विस रिकार्ड, मेडिकल बुक, पर्सनल फ्फईल एवं पुत्री के जन्म प्रमाण पत्र में आद्रिका AADRIKA दर्ज है तथा मेरी पुत्री नाबालिग / अवयस्क हैं। मेरी पुत्री का जन्म प्रमाण-पत्र उप रजिस्ट्रार जन्म मृत्यु एवं सहा महाप्रबंधक भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाईनगर, जन्म दिनांक 28/07/2006 रजिस्ट्रीकरण कमॉक 1897 रजिस्ट्रीकरण दिनांक 14/8/2006 जन्म के तहत बनवाया हैं इसमें मेरी पुत्री का नाम आद्रिका दर्ज हैं । मेरी पुत्री के आधार कार्ड, पासपोर्ट एवं 10वीं परीक्षा के अंक-सूची / शाला रिकार्ड में उनका नाम आद्रिका सिंह **AADRIKA SINGH** दर्ज है । यह नाम मेरी पुत्री का पूर्ण एवं सही नाम हैं । अपने बीएसपी के सर्विस रिकार्ड में पुत्री का नाम आद्रिका सिंह AADRIKA SINGH पुत्री के आधार कार्ड, पासपोर्ट एवं 10वीं परीक्षा के अंक-सूची / शाला रिकार्ड के अनुसार दर्ज करवाना चाहता हूँ। जोकि मेरी पुत्री का सही एवं पूर्ण नाम है। त्रुटिवश उपनाम का उपयोग मेरे उक्त सर्विस रिकार्ड में दर्ज नहीं हो पाया । मेरी पुत्री के जन्म प्रमाण-पत्र में दर्ज नाम आद्रिका AADRIKA को आद्रिका सिंह AADRIKA SINGH दर्ज करवाना हैं । भविष्य में किसी प्रकार की अड़चनें न आवे जिसके लिये अपने नाबालिक पुत्री का नाम अपने भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई के समस्त रिकार्ड में एवं जन्म प्रमाण पत्र. में नाम सुधार की आवश्यकता हैं । अत: मेरी पुत्री को आद्रिका सिंह AADRIKA SINGH के नाम से जाना एवं पहचान जाए एवं जहाँ-जहाँ आवश्यक हो नाम सुधार हेतु यह शपथपत्र प्रस्तुत हैं

शपथकर्ता

न्यायालय नायब तहसीलदार पाटन के न्यायालय में मामला क्रमांक: 202404101500034

विषय:-ब-121, मामले की श्रेणी राजस्व सन्:-2023-2024
तुलसी प.ह.न. -00016
पक्षकारों का विवरण आवेदक पक्षकार- रामचंद्र निषाद
अनावेदक पक्षकार- छ.ग शासन

//ईश्तहार//

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि, आवेदक रामचंद्र निषाद पिता व्यासनारायण निवासी ग्राम तुलसी तहसील पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.) द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया है कि आवेदक के नाम पर ग्राम तुलसी, प.ह.नं. 16, तहसील पाटन, जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 576 रकबा 1.000 हे. भूमि राजस्व अभिलेख में दर्ज है। आवेदक को उक्त भूमि का ऋण पुस्तिका प्राप्त था जो असावधानीवश दिनांक 30/03/2024 को ग्राम पाटन के तहसील परिसर में कही गुम हो गया है, जो आज दिनांक तक अप्राप्त है। जिसकी रिपोर्ट थाना पाटन में दर्ज कराया गया है। ऋण पुस्तिका किसी भी व्यक्ति, संस्था इत्यादि को विक्रय, दान, रहन- बंधक नहीं रखा गया है। ऋण पुस्तिका गुम हो जाने के कारण उन्हें बहुत परेशानी हो रही है। आवेदक द्वारा उक्त भूमि का डुप्लिकेट ऋण पुस्तिका प्रदान किये जाने का निवेदन किया गया है।

अत: आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन के संबंध में जिस किसी व्यक्ति संस्था को दावा आपत्ति प्रस्तुत करना हो तो वे नियत सुनवाई दिनांक 29.04.2024 तक स्वत: अथवा वैध प्रतिनिधि के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर दावा आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। नियत समयावधि के बाद प्राप्त दावा आपत्ति पर न्यायालय द्वारा विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनाक 12.04.2024 को जारी किया जाता है।

मुहर

नायब तहसीलदार
पाटन, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

संक्षिप्त-खबर

भाजपा युवामोर्चा महामंत्री व युवा लोधी समाज जिलाध्यक्ष रवि सिंगौर के जन्मदिन मे पर बधाई देने पहुँचे युवा लोधी समाज प्रदेश अध्यक्ष सुरेश सिंगौर

पाटन (समय दर्शन)। रवि सिंगौर का जन्मदिन उनके गृहग्राम सांकरा सहित आसपास के ग्राम मोतीपुर खमरिया मे धूमधाम से मनाया गया।

इस दौरान जिलाउपाध्यक्ष बसंत सिंगौर पूर्व पालिका उपाध्यक्ष उमेश साहू आंनद पांडे राधे साहू ह्रदय राम साहू ऋषभ राजपूत, सरपंच पति यशवंत जांगड़े जी, टिकेन्द्र सिंगौर, तुलाराम सिंगौर, कमल सिंगौर, भोजराम सिंगौर ब्रम्हा यादव केजराम वैष्णवकामता सिगौर मनीष कौशले वरूण सिंगौर, मुन्ना सिंगौर छोटू यादव विरेन्द्र यदु तुलेश सिंगौर मोहन सिंगौर लवकुश सिंगौर हरेन्द सिंगौर, नरोत्तम सिंगौर, साहिल सिंगौर छोटे नागेश सिंगौर चुम्मन सिंगौर लक्ष्मीनारायण श्रवण सिंगौर मुकेश सिंगौर परस सिंगौर सोनू सिंगौर, नारायण चन्द्राकर खिलेश विश्वकर्मा, सत्यम निर्मलकर, संजय यदू, भुपेन्द्र पटेल सहित अन्य लोग मौजूद रहे। रवि सिंगौर ने सभी का आभार करते हुए कहा की मेरे जन्मदिन पर आप सभी प्रियजनो द्वारा दिए गए सभी विचारशील शब्दों और अद्भुत संदेशों के लिए मै आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मेरे पास आप जैसे शुभचिंतक दोस्तों का इतना अद्भुत समूह है। आप सभी ने सचमुच मेरा जन्मदिन को यादगार दिन बना दिया कहते हुए आभार किया।

आकाश में गुब्बारे से जिला प्रशासन ने भेजा बुलावा घर आबे संगी

सारंगढ़ बिलाईगढ़ (समय दर्शन)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी धर्मेश कुमार साहू जिले के बिलाईगढ़ विकासखंड के ग्राम पवनी के मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में शामिल हुए। कलेक्टर श्री साहू ने इस अवसर पर जिले से पलायन किया नागरिकों को कहा कि यह बुलावा के लिए प्रतीक के तौर पर तीन रंगों से भरा गुब्बारा उन तक आकाश के माध्यम से भेज रहे हैं। इस गुब्बारे में लिखा हमारा संदेश स्पष्ट है कि *घर आबे संगी*। घर बुलाने का जिला प्रशासन का अपील है कि वह अपने घर आकर 7 मई 2024 को मतदान करने अपने संबंधित मतदान केंद्र में जाए और लोकतंत्र के इस महान पर्व में अपनाया भागीदारी निभाएं। कलेक्टर श्री साहू ने अपने उद्बोधन में सभी नागरिकों को कहा कि वह अपने साथ-साथ घर परिवार, आस-पड़ोस और अपने से जुड़े सभी लोगों को मतदान करने के लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर स्वीप नोडल अधिकारी हरिशंकर चौहान, एसडीएम बिलाईगढ़ डॉ स्निग्धा तिवारी, सीईओ बिलाईगढ़ प्रतीक प्रधान सहित स्थानीय पत्रकार एवं बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे।

फ्रेंडली फुटबॉल मैंच खेल कर दिए मतदान अवश्य करने का संदेश

भिलाईनगर (समय दर्शन)। जिलाधीश ऋचा प्रकाश चौधरी ने फुटबॉल पर किक मार कर सेक्टर 2 फुटबॉल मैदान में मतदाता जागरूकता अभियान अंतर्गत खेले गए फ्रेंडली फुटबॉल मैच का शुभारंभ किये। रोमांचक मैच में आईजी, एसपी, भिलाई व दुर्ग निगम आयुक्त, जिला पंचायत सीईओ को मैदान में सधे हुए खिलाड़ियों की तरह खेलता देख दर्शको ने तालिया से उनका उत्साह वर्धन करते रहे । मैच के समाप्ति पर कलेक्टर ने टीम के कप्तान तथा सदस्यों को पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मान किया ।

जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देश पर स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत जिला प्रशासन एवं नगर निगम भिलाई के सहयोग से सेक्टर 2 राजेश पटेल स्मृति फुटबॉल मैदान में मतदाता जागरूकता अभियान अंतर्गत एक दिवसीय फ्रेंडली फुटबॉल मैच मतदान के नाम खेला गया। मैच का शुभारंभ कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी ने फुटबॉल पर किक मार कर किए। इसके पूर्व उन्होंने मैदान के बीच में कतार में खड़े भिलाई निगम अधिकारी इलेवन एवं जिला प्रशासन अधिकारी इलेवन के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर टॉस किए । 20 मिनट तक मैदान में फुटबॉल लेकर दोनों टीम एक दूसरे को छकाते रहे और पहला गोल जिला प्रशासन की टीम ने किया तो मैदान के चारों ओर बैठे दर्शकों ने तालियां बजाकर खिलाड़ियों का उत्साहवंधन किए । मैच में आईजी रामगोपाल गर्ग, एसपी जितेन्द्र शुक्ला, आयुक्त निगम भिलाई देवेश कुमार ध्रुव, जिला पंचायत सीईओ अश्वनी कुमार देवांगन, दुर्ग निगम आयुक्त लोकेश चंद्राकर आदि उपस्थित थे।

एनआरसी पाटन दिखा रहा है कुपोषित बच्चों को सुपोषण की राह

अब तक 491 बच्चो को मिला है लाभ, एम्स रायपुर और यूनिसेफकी टीम कर रहे है टेली मानिटरिंग

बलराम यादव/ समय दर्शन

पाटन। बच्चो को ही देश का भविष्य कहा जाता है। ऐसे में जब बच्चे बचपन में ही कुपोषित हो जाते है तो उसका जीवन भर हमेशा बीमारियों से लड़ना पड़ता है। जिससे की स्वच्छ समाज स्थापना की कल्पना बेमानी हो जाती है। कुपोषित बच्चो को सुपोषित बनाने के लिए शासन ने महत्वपूर्ण योजना बनाकर पाटन में पोषण पुनर्वास केंद्र की स्थापना की है। जिसे एन आर सी के नाम से जाना जाता है। पाटन के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के परिसर में स्थित इस केंद्र में अभी तक 491 कुपोषित बच्चो का इलाज कर सुपोषित किया जा चुका है। यह पाटन के लिए बड़ी उपलब्धि है। पाटन स्थित एन आर सी सेंटर कुपोषित बच्चो के लिए वरदान साबित हो रही है।

छत्तीसगढ़ शासन दुर्ग जिले को कुपोषण मुक्त करने कलेक्टर दुर्ग पुष्पेंद्र मीणा के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग एवं महिला बाल विकास विभाग के संयुक्त प्रयास से कार्य किए जा रहे हैं।

डॉ. जे पी मेश्राम मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला दुर्ग, विपुल कुमार गुप्ता अनुविभागीय अधिकारी पाटन , डॉ. सतीश मेश्राम जिला स्वास्थ्य अधिकारी , डॉ. दिव्या श्रीवास्तव नोडल अधिकारी (शिशु स्वास्थ्य) , डॉ. रश्मि भोसले जिला सलाहकार (शिशु स्वास्थ्य) एवं महिला बाल विकास विभाग के परियोजना अधिकारी सुमीत गंडेचा, पुष्पा गुप्ता द्वारा निरंतर समीक्षा करते हुए क्षेत्र में गंभीर कुपोषित को चिन्हांकित कर पोषण पुनर्वास केंद्र में भर्ती कर बच्चों के पोषण सुधार किए जा रहे हैं।

डॉ. आशीष शर्मा बीएमओ पाटन ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाटन में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा 2 अक्टूबर 2019 को पोषण पुनर्वास केंद्र का संचालन आरंभ किया गया। आरंभ से अब तक 491 से अधिक गंभीर कुपोषित बच्चों को भर्ती कर ईलाज एवं पोषण सुधार किया जा रहा है।

वर्तमान में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) रायपुर और यूनिसेफ के विशेषज्ञों द्वारा टेली मॉनिटरिंग की जा रही है।

आइए जानते हैं कि पोषण पुनर्वास केंद्र क्या होता है?

पोषण पुनर्वास केंद्र सुविधा आधारित इकाई है जहां 5 वर्ष आयु के गंभीर रूप से कुपोषित बच्चों जिनमे चिकित्सकीय जटिलताएं हो उन्हे चिकित्सकीय सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। इसके अलावा बच्चो के माताओं एवं अन्य देखभाल कर्ताओं को बच्चों के समग्र विकास हेतु आवश्यक देखभाल तथा खानपान संबंधित कौशल का प्रशिक्षण प्रदाय किया जाता है। पोषण पुनर्वास से डिस्चार्ज उपरांत बच्चे को अनुश्रवण करने के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं मितानिनो के माध्यम से गृह भेंट किया जाता है। पोषण पुनर्वास केंद्र के चिकित्सक एवं नर्स द्वारा फॉलो अप किया जाता है।

बच्चे का डिस्चार्ज के बाद भी मानिट्रिग सुविधा

पोषण पुनर्वास के केंद्र से जब बच्चे सुपोषण के स्टार पर आ जाते है तब उन्हे केंद्र से डिस्चार्ज करते है। लेकिन इसके बाद भी इस केंद्र के माध्यम से बच्चो का मानिट्रिग किया जाता है। पोषण पुनर्वास केंद्र में विशेष फॉर्मूला एफ75 एवं एफ100 फीडिंग दी जाती है।

पोषण पुनर्वास केंद्र से डिस्चार्ज उपरांत बच्चों को महिला बाल विकास विभाग के माध्यम से सी सैम में पंजीयन कर समुदाय स्तर पर आगामी पोषण सुधार किया जाता है।

145 गंभीर कुपोषित बच्चो सफल इलाज

पोषण पुनर्वास केंद्र पाटन में जब से सुविधा बढ़ाई गई है तब से यहां पर कुपोषित बच्चो को भर्ती लेकर भी इलाज किया जाता है। जानकारी के मुताबिक 1जनवरी 2023 से अब तक 145 गंभीर कुपोषित बच्चों को भर्ती कर पोषण सुधार किया गया है। इसके लिए बच्चो के साथ उसके माता को भी रखा जाता है जिससे की उन्हें भी जानकारी हो सके की बच्चो को देखभाल कैसे करना है। उनका खान पान कैसे होता है जिससे की वे अपने घर में भी बच्चे की देखभाल ठीक से कर सके।

इस तरह करे कुपोषित बच्चे की पहचान

खंड चिकित्सा अधिकारी पाटन डॉक्टर आशीष शर्मा ने बताया की अपने निकटतम आंगनवाड़ी केंद्रों एवं हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर में अपने बच्चे का पोषण स्तर की जांच करवाएं,जहां बच्चे का ऊंचाई/लंबाई के आधार पर वजन की गणना कर एसडी स्कोर निकाला जाता है।

यदि बच्चे का एस डी स्कोर -3स्ष्ठ या उससे कम होता है तो तत्काल पोषण पुनर्वास केंद्र से संपर्क कर उचित परामर्श प्राप्त कर बच्चे को भर्ती कर पोषण सुधार अति आवश्यक होता है।

इनका भी सहयोग महत्वपूर्ण

पोषण पुनर्वास केंद्र पाटन की विशेषता यह है की इसे राज्य शासन के साथ साथ अन्य संस्था का भी सहयोग मिल रहा है। जिसमे नेशनल हेल्थ मिशन एवं जिला खनिज न्यास संस्थान जिला दुर्ग एवं जीवन दीप समिति पाटन के विशेष संयुक्त प्रयास से इसका संचालन में मदद मिल रही है। यही कारण है को यहां पर काफी अच्छी सुविधा उपलब्ध कराई गई है। यह पोषण पुनर्वास केंद्र पाटन संभवत: पहला केंद्र जहां मिलेट्स (श्री अन्न) से एंपावर्ड है।इसके अलावा जरूरत पढ़ने पर बच्चों को फिजियोथेरेपी भी दी जाती है। इस केंद्र पर श्रीमती विधि गौतम और श्रीमती चांदनी साहू स्टाफनर्स द्वारा विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके अलावा बच्चो की माताओं का भी पोषण स्तर ज्ञात कर उन्हे भी ईलाज परामर्श दिया जाता है।

टीम वर्क से होता है काम

पाटन के एन आर सी सेंटर में बच्चो का इलाज काफी टीम वर्क के साथ किया जाता है। कुपोषित बच्चो की पहचान से लेकर उसकी सेंटर तक लाने, डिस्चार्ज होने पर घर तक पहुंचाने , सेंटर में रहने तथा इलाज के लिए भी टीम वर्क काम करते है। इसके अलावा बच्चो के खेलने का भी प्रबंध रखा जाता है। इस कार्य में खंड चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर आशीष शर्मा भी लगातार मानिटिरिंग करते हुए सतत निरीक्षण करते हुए। टीम वर्क में डॉक्टर के साथ साथ श्रीमती विधि गौतम और श्रीमती चांदनी साहू स्टाफनर्स के अलावा पूनम साहू विकासखंड कार्यक्रम प्रबंधक ,टाकेश्वर देवांगन, टीमन साहू द्वारा प्रबंधन किया जाता है।

रूपकुमारी चौधरी को प्रचण्ड मतों से जीताकर बसना का नाम रौशन करें- अग्रवाल

अष्ट प्रहरी हरिनाम संकीर्तन नामयज्ञ में मुख्य अतिथि विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल हुए शामिल

बसना(समय दर्शन)। बसना क्षेत्र के ग्राम हबेकांटा में आयोजित अष्ट प्रहरी हरिनाम संकीर्तन नामयज्ञ में गुरुवार को बतौर मुख्य अतिथि बसना विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल शामिल हुए। उन्होंने पूजा अर्चना कर क्षेत्र की खुशहाली की कामना की। विधायक डॉ.सम्पत अग्रवाल ने कहा कि अष्ट प्रहरी हरिनाम संकीर्तन नामयज्ञ का आयोजन गौरव की बात है। हरि किर्तन से क्षेत्र में सुख समृद्धि, खुशहाली व विकास के साथ भाईचारा बना रहता है। इस दौरान उन्होंने लोकसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी रूपकुमारी चौधरी को प्रचण्ड मतों से जीताकर बसना का नाम रौशन करने की अपील की, और मोदी जी के गारंटी और योजनाओं को बताया।

इस अवसर पर सरपंच त्रिलोचन भोई, ग्राम गौंटिया आनंद बेहरा, नंदकिशन साव, मिलिंद भोई,हेमसागर भोई, रोहित प्रधान, बिलास बेहरा, विद्याधर प्रधान, परशु यादव, दयानिधि महापात्र, श्याम लाल नाग, अभिमन्यु मानिकपुरी, संतलाल साहू, सुनील भोई, चिंतासागर प्रधान, जितेन्द्र बेहरा, प्रकाश बेहरा, कौशल प्रधान, राजेश बेहरा, बंशी भोई, बिनी भोई, गणेश भोई सहित अन्य सम्मानितजन मौजूद थे।

मतदान बर परिवार अऊ गांव के सब मतदाता ल लाना है-कलेक्टर साहू

कलेक्टर साहू ने उत्तम सिंह से फोन पर मतदान के लिए आने कहा

सारंगढ़ बिलाईगढ़ (समय दर्शन)। कलेक्टर और जिला निर्वाचन अधिकारी धर्मेश कुमार साहू ने ग्राम पवनी के मतदान साक्षरता रैली कार्यक्रम के दौरान पलायन किए जिले के नागरिकों को मतदान करने के लिए फोन करके बुलाने के अभियान की शुरुआत ग्राम सलीहा के उत्तम सिंह से बात कर किया। कलेक्टर श्री साहू ने उत्तम सिंह से फोन पर छत्तीसगढ़ी में बात किया। श्री साहू ने कहा अऊ का हालचाल, सब बड़े बने और कहां हो आजकल, उत्तम सिंह ने कहा, अभी काम करे आए हन सर। श्री साहू ने फिर आगे कहा कि, आप ल निमंत्रण है यहां, लोकसभा के चुनाव होना है 7 मई के, अऊ जरूर आना है, उत्तम सिंह ने कहा, निमंत्रण मिले हे सर। कलेक्टर श्री साहू ने कहा,

और ये देखना है कि बिना लालच के बिना भय के हम ला वोट डालना है ताकि सही व्यक्ति चुन के आए। मोर अनुरोध

अऊ है कि, अपन घर में मतदाता 18 साल से ऊपर मतदाता है ओमन ल भी वोट डालना है। अऊ गांव के मतदाता हो ही ओ सब मन ल लाना है।

कलेक्टर श्री साहू ने अपने परिवार सहित गांव के अन्य नागरिकों को मतदान के दिन लाने के लिए उत्तम सिंह से अनुरोध किया। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर और जिला निर्वाचन अधिकारी श्री धर्मेश कुमार साहू के मार्गदर्शन में स्वीप नोडल अधिकारी श्री हरिशंकर चौहान ने पंचायत और बिहान समूह के महिला सदस्यों के माध्यम से जिले के 15 हजार पलायन किए लोगों को वीडियो कॉल करके मतदान करने के लिए बुलाया है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे। गौर करने वाली बात यह है कि अधिकांश पलायन किए किसान परिवार से होते हैं। वे अपनी खरीफके नवम्बर दिसम्बर में फसल कटाई के बाद जाते हैं और चार माह काम करके फिर फसल बुवाई के समय लौटते हैं। इस बार मानसून के एक माह पहले 7 मई को लोकतंत्र के पर्व, देश के गर्व में शामिल होने के लिए, उनके लौटने का अनुरोध जिला कलेक्टर श्री धर्मेश कुमार साहू ने किया है ताकि शत प्रतिशत मतदान संपन्न हो।

बसना प्रखण्ड द्वारा वनवासी कल्याण आश्रम के लिए जुटाया गया राशि

बसन(समय दर्शन)। बसना में विश्व हिंदू परिषद और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने रामनवमी के शुभ अवसर पर वनवासी कल्याण आश्रम के लिए प्रत्येक व्यापारियों के पास जाकर राशि जुटाई गयी, और व्यापारियों ने भी बड चढ़ कर इस शुभ कार्य में उदारता का परिचय देते हुए सहयोग प्रदान किया।

वनवासी कल्याण आश्रम में जो बच्चे पढ़ रहे हैं उनके सहयोग के लिए प्रतिवर्ष बसना प्रखण्ड द्वारा सहयोग राशि विश्व हिंदू परिषद व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा किया जाता है। ज्ञात हो कि, वनांचल मे संचालित साधु ,संतों ,रिषि,मुनियो व वैदिक संस्कृति की धरोहर सनातनी आश्रमों की सुरक्षा, रखरखाव को ध्यान में रखते हुए रामनवमी के अवसर पर विश्व हिंदू परिषद व राष्ट्रीय स्वयंसेवक सदस्य बसंत देवता ,दिनेश डडसेना, पंचराम गहिर ,ध्रुव कुमार बारिक, श्यामल भोई ,संदीपनी होता, ने बसना में व्यापारियों के पास जाकर सहयोग राशि संग्रह किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पुलिस थाना के सभी स्टाफ ने भी भरपूर सहयोग की तथा थाना में जितने भी स्टाफथे स्वेच्छा से सहयोग राशि समर्पित की।

संगठन के द्वारा आगामी 23 अप्रैल को हनुमान जन्मोत्सव को भी धूमधाम से मनाने के लिए सभी व्यापारियों एवं बसना नगर वासियों से अपील की गयी।

विधानसभा 64-दुर्ग शहर के लिए माकपोल हेतु नियुक्त अधिकारी-कर्मचारियों का प्रशिक्षण 22 को

दुर्ग। लोकसभा निर्वाचन 2024 हेतु लोकसभा क्षेत्र क्रमांक 7 दुर्ग अंतर्गत विधानसभा 64-दुर्ग शहर के उपयोग होने वाले ईवीएम एवं वीवीपैट मशीनों की कमिशनिंग कार्य 26 अप्रैल को प्रात: 10 बजे से मानस भवन में किया जाना है।

विधानसभा 64-दुर्ग शहर के लिए नोडल अधिकारी अरविन्द कुमार एक्का (आईएएस) सहायक रिटर्निंग ऑफिसर होंगे। माकपोल हेतु नियुक्त अधिकारी-कर्मचारियों का प्रशिक्षण 22 अप्रैल को सुबह 11 बजे से भिलाई इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी महाविद्यालय (बीआईटी) दुर्ग में आयोजित की गई है। माकपोल कार्य के लिए जिन अधिकारी/कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है, उनमें प्रभारी अधिकारी ग्रामीण यांत्रिकी सेवा उप अभियंता श्रीमती कृष्णा सिंधा को नियुक्त किया गया है।

मतदाताओं को जागरूक करने राजस्व विभाग द्वारा निकाली गई मशाल रैली

कलेक्टर और अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर शत-प्रतिशत मतदान का दिया संदेश

मुंगेली (समय दर्शन)। लोकसभा निर्वाचन में शत-प्रतिशत मतदान के लिए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी राहुल देव की अगुवाई में राजस्व विभाग द्वारा जिला कलेक्टोरेट परिसर से मशाल रैली निकाली गई। इस दौरान अधिकारी-कर्मचारियों द्वारा मतदाता जागरूकता स्लोगन संबंधी तख्ती अपने हाथों में लेकर नारा लगाते हुए मतदान के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया गया। यह रैली जिला कलेक्टोरेट परिसर से शुरू होकर ग्राम करही के हाई स्कूल मैदान में समाप्त हुई। जहां आकर्षक स्वरूप में रंगोली बनाई गई। कलेक्टर और अधिकारियों ने सुंदर रंगोली के ऊपर सजे दीप को प्रज्वलित कर ''शत-प्रतिशत मतदान, मुंगेली जिले का अभिमान'' का संदेश दिया। कलेक्टर ने वहां उपस्थित लोगों को अपने मताधिकार के प्रति जागरूक होकर 07 मई को देश हित में मतदान करने की शपथ दिलाई।

कलेक्टर ने कहा कि जिले में स्वीप के तहत अलग-अलग तरह के मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिसमें विभिन्न वर्ग, समुदाय, संगठन के लोग भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। सभी की सहभागिता से हम निश्चित ही शत-प्रतिशत मतदान का लक्ष्य हासिल करेंगे। उन्होंने कहा कि मतदान को लेकर सभी मतदाता जागरूक है, जरूरत है मतदान केंद्र पहुंचकर अपने मताधिकार प्रयोग करने की। उन्होंने जिले के सभी मतदाताओं को लोकतंत्र के महापर्व में सहभागिता की अपील की। अपर कलेक्टर श्रीमती निष्ठा पाण्डेय तिवारी ने कहा कि मुंगेली विधानसभा अंतर्गत कम प्रतिशत वाले मतदान केंद्रों में मतदाताओं को जागरूक करने के लिए शानदार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मशाल रैली और दीपोत्सव के माध्यम से मतदाताओं को मतदान करने का संदेश दिया गया, जो सराहनीय है। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रभाकर पाण्डेय ने कहा कि जिस तरह से स्वीप में लोगों की सहभागिता दिखाई दे रही है, इससे हम शत-प्रतिशत मतदान का लक्ष्य जरूर हासिल करेंगे।

उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती मेनका प्रधान ने कहा कि मशाल रैली और दीपोत्सव के दौरान लोगों में जो उत्साह देखने को मिला, यही उत्साह मतदान दिवस को भी होना चाहिए। एसडीएम एवं रिटर्निंग अधिकारी मुंगेली श्रीमती पार्वती पटेल ने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया में मतदान सबसे महत्वपूर्ण है। इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए। कार्यक्रम में सत्यम बालिका मानस मंडली द्वारा ''चलो दीदी, चलो बहिनी वोट देहे जाबो, पारा-पड़ोसी ल संग म ले जाबो'' गीत के माध्यम से मतदाताओं को अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ देवेंद्र पैकरा ने सुंदर गीत के जरिए संदेश दिया कि लोकसभा निर्वाचन में एक बार मतदान से चुकने पर 05 साल का इंतजार करना पड़ता है। संविधान ने हमें जो अधिकार दिया है, इसका प्रयोग अवश्य करें। राजस्व विभाग के पटवारी अतुल केशरवानी ने मतदाता जागरूकता गीत के जरिए समा बांधा। कार्यक्रम के समापन में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने मानस मंडली के सदस्यों को पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया।

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.), पिन-491111 से मुद्रित कर 65/1920, परशुराम नगर प्रोफेसर कालोनी, रायपुर (छ.ग.) पिन- 492001 से प्रकाशित। संपादक :- दामोदर राव, फोन नं.-0771-4218364, मो. 9303404360, ईमेल- samaydarshanraipur@gmail.com, RNI: CHHHIN/2018/76878, डाक पंजीयन /रायपुर संभाग/63/2022-24